साधना और सेवा का संगम

वात्सल्य निर्झर

50/-

मार्च 2026
विक्रम सम्वत् 2082

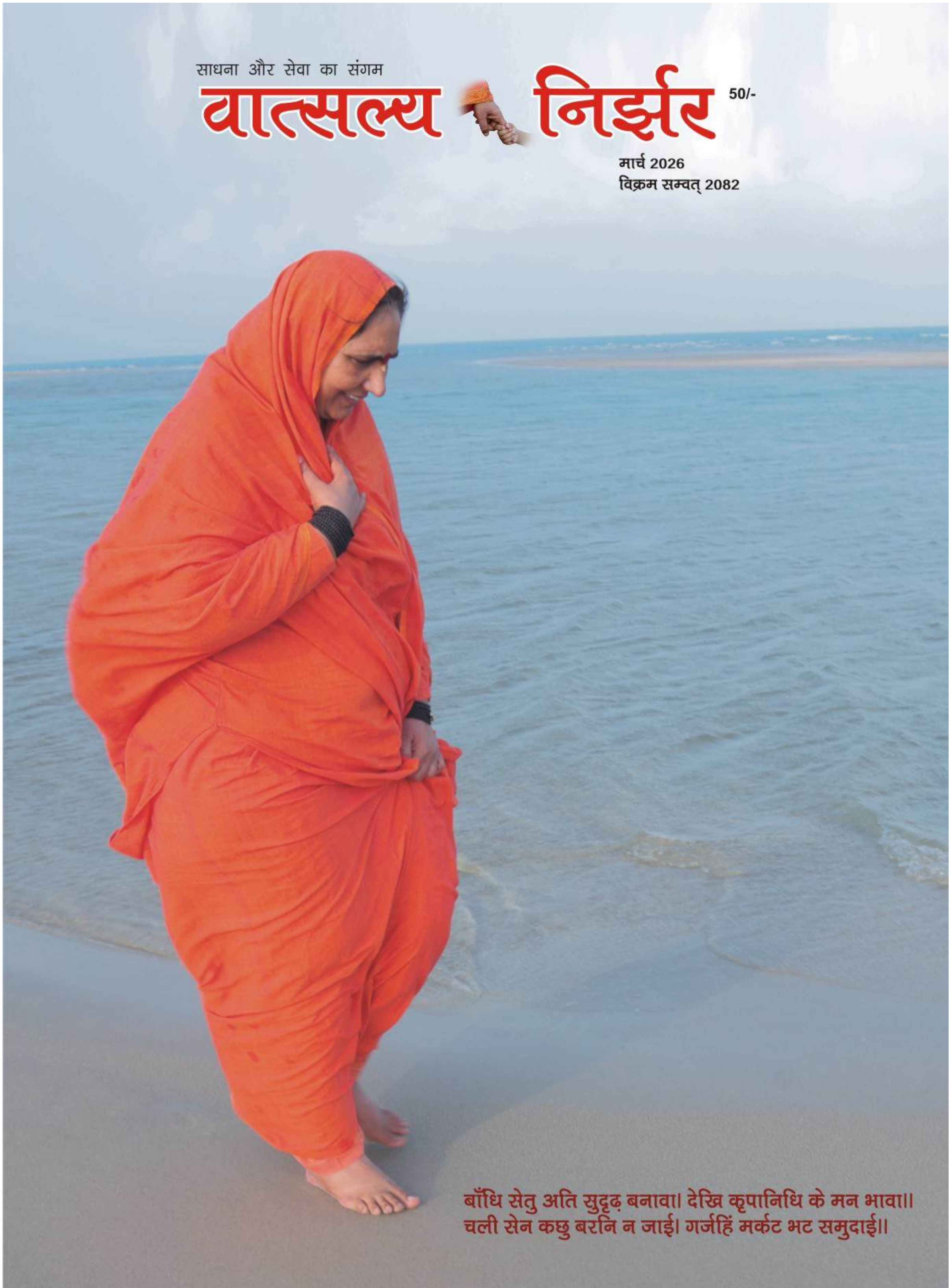

बाँधि सेतु अति सुदृढ़ बनावा। देखि कृपानिधि के मन भावा।।
चली सेन कछु बरनि न जाई। गर्जहिं मर्कट भट समुदाई।।

Rajluxmi Samvid Gurukulam Sainik School

Nalagarh (Himachal Pradesh) | C.B.S.E. Residential Boys School | (Class VI to XII) Science and Commerce

We bring out the winner in you

How We Stand Out ?

- Regular Sanskaram Classes
- Smart Classes and Experienced
- Teachers
- Indoor and Outdoor Games
- Shooting, Swimming, Horse Riding
- Integrated program for NDA,JEE and NEET preparation
- Communication Classes
- AC Hostels
- Pollution Free Environment
- Well Equipped Labs
- Healthy and Vegetarian Food

Contact for Admission

Bariyan, Tehsil : Nalagarh, Dist. : Solan (H.P.) 174101

Call us: 7876004251 & 7876430935, www.samvidgurukulam.com

श्री भगवते साम्बशिवाय नमः । स्नानीयं जलं समर्पयामि ॥

साधना और सेवा का संगम
वात्सल्य निर्झर
वर्ष 23, अंक 2, मार्च 2026

मुख्य संरक्षक
परम पूज्य महामण्डलेश्वर अनन्तश्री विभूषित
युगपुरुष स्वामी परमानन्द गिरि जी महाराज

संरक्षक
परम पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी

प्रधान सम्पादक
संजय गुप्ता

प्रकाशक
परमशक्ति पीठ द्वारा संजय गुप्ता

सम्पादकीय मण्डल
देवेन्द्र शुक्ल एवं स्वास्तिका

प्रधान कार्यालय
वात्सल्य प्रकाशन, परमशक्ति पीठ
लव-102, अग्रसेन आवास,
66, इन्द्रप्रस्थ विस्तार, दिल्ली -110092
दूरभाष : 011 22238751
मोबाईल सम्पर्क : 99588 85858
ई मेल : info@vatsalyagram.org
वेबसाइट : www.vatsalyagram.org

शाखा कार्यालय
वात्सल्य ग्राम
मथुरा-वृन्दावन मार्ग, पोस्ट-वात्सल्य ग्राम
वृन्दावन (उ.प्र.) 281003

प्रकाशक एवं सम्पादक संजय गुप्ता द्वारा
परमशक्ति पीठ के लिए
हरिओम त्यागी, ए.आर.पैकटेक प्रा.लि.,
आई-23, बेसमेंट, सेक्टर-9, नोएडा, उ.प्र. से मुद्रित एवं
परमशक्ति पीठ,
लव-103, 66, इन्द्रप्रस्थ विस्तार,
पटपड़गंज, दिल्ली से प्रकाशित

वात्सल्य निर्झर में प्रकाशित लेख एवं रचनाएँ उनके लेखकों के विचारों की अभिव्यक्ति हैं। अतः उनसे सम्बन्धित किसी भी विवाद के लिए लेखक अथवा रचनाकार ही उत्तरदायी रहेंगे।

त्वमेव संध्या सावित्री त्वं देवी जननी परा
परमशक्ति पीठ

अन्तर्यात्रा

06 ज्ञानी को कुछ नहीं चाहिए
08 अवतार की प्रतीक्षा मत करो हिन्दुओं...
10 आधुनिक महाभारत का युद्ध...
12 श्री रामेश्वरम् धाम में...
16 दीदी माँ के आशीर्वाद से हम...
20 दीदी माँ जी का दक्षिण भारत प्रवास
29 धर्म संस्कृति
30 युवाओं के लिए

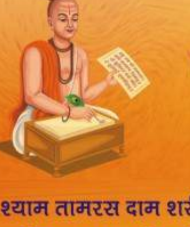

गोस्वामी श्री तुलसीदास जी कृत
मानस मोती

श्याम तामरस दाम शरीरं । जटा मुकुट परिधन मुनिचीरं ॥
पाणि चाप शर कटि तूणीरं । नौमि निरन्तर श्रीरघुवीरं ॥

-अरण्यकाण्ड

हे नीलकमल की माला के समान श्याम शरीरवाले! हे जटाओं का मुकुट और मुनियों के वस्त्र पहने हुए, हाथों में धनुष-बाण लिए तथा कमर में तरकस कसे हुए श्रीरामजी! मैं आपको निरन्तर नमस्कार करता हूँ।

अपनी बात... - देवेन्द्र शुक्ल

अभी पिछले दिनों श्री रामेश्वरम् धाम, तमिलनाडु में श्रीराम कथा महोत्सव का दिव्य और भव्य आयोजन सम्पन्न हुआ, जिसे पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भराजी ने व्यासपीठ पर विराजमान होकर संबोधित किया। सनातन धर्म के आस्था केन्द्रों चारों धाम श्री रामेश्वरम्, श्री बद्रीनाथ, श्री द्वारिका और श्री जगन्नाथ पुरी में प्रभुकथा कहने के संकल्प का उनका यह प्रथम आयोजन था। परमशक्ति पीठ के महासचिव श्री संजय भैयाजी, पूज्या साध्वी साक्षी चेतना जी, उपाध्यक्ष श्री जयभगवान अग्रवाल के मार्गदर्शन एवं साध्वी शिरोमणि जी के संयोजकत्व में परमशक्ति पीठ इसका आयोजक बना। पूज्या दीदी माँ जी के शिष्य मंडल ने अपना बहुत ही सुंदर योगदान इस कथा महोत्सव के लिए समर्पित किया। कई दिनों पूर्व पहुँचकर तमिलनाडु जैसे एक अहिंदी भाषी राज्य में भाषा संबंधी अनेक कठिनाईयों के बीच इस आयोजन को सफलतापूर्वक सम्पन्न करना किसी चुनौती से कम न था। परन्तु दृढ़ संकल्पों ने इसे पूर्ण किया।

दक्षिण भारत की समृद्ध सनातन परंपरा, सनातन धर्म की जड़ों में गहराई तक उतरी हुई है। यहाँ वैदिक ज्ञान, द्रविड़ संस्कृति, भक्ति भावना और शास्त्रों का अनुपम मेल दिखाई देता है। प्राचीन मंदिरों की इस भूमि पर आकर लाखों श्रद्धालु प्रतिदिन अपनी धन्यता को प्राप्त करते हैं। दक्षिण भारत के तमिल साहित्य में मुरुगन, शिव, विष्णु और देवी की पूजा का उल्लेख मिलता है। छठवीं से नौवीं शताब्दी तक भक्ति आंदोलन ने इसे जन-जन तक पहुँचाया। 'अलवार' सन्तों ने दिव्य प्रबंधम् की रचना कर विष्णु भक्ति की अलख जगाई, तो 'नयनार' सन्तों ने तेवारम् और तिरुवाचकम् जैसे ग्रंथों की रचना करके शिव भक्ति को जाग्रत किया। सबसे सुन्दर बात ये रही कि ये संत सनातन धर्म के सभी वर्गों से थे और उन्होंने मंदिरों को भक्ति का केंद्र बनाया।

सनातन आस्था के इन शक्ति केन्द्रों के निर्माण का स्वर्णयुग सातवीं शताब्दी के पल्लव, नौवीं से तेरहवीं शताब्दी के बीच चोल, पांड्य और विजयनगर साम्राज्यों में आया। तंजावुर के बृहदीश्वर मंदिर, मदुरै के मीनाक्षी अम्मन मंदिर और तिरुमाला के श्री तिरुपति बालाजी मंदिर इसके अद्वितीय उदाहरण हैं। इन मंदिरों के ऊँचे गोपुरम् (प्रवेश द्वार), विमान (मुख्य गर्भगृह), मंडप और नक्काशीदार स्तंभों के रूप में द्रविड़ वास्तुकला का एक अद्भुत और अलौकिक रूप देखकर सारा विश्व अचंभित रह गया। भव्य मंदिरों के निर्माण के पश्चात् पाँचवीं शताब्दी आते-आते 'आगम शास्त्र' ने पूजन पद्धति को व्यवस्थित किया। शैव, वैष्णव (पांचरात्र और वैखानस) तथा शाक्त आगम अलग-अलग हैं। ये वेदों की भावना से प्रेरित हैं परन्तु मूर्ति पूजा, मंदिर निर्माण और अनुष्ठानों का विस्तृत विवरण देते हैं। आठवीं शताब्दी में केरल के आदि जगद्गुरु पूज्य शंकराचार्य जी महाराज ने 'अद्वैत वेदांत' के द्वारा, पूज्य जगद्गुरु श्री रामानुजाचार्य जी महाराज (तमिलनाडु) ने 'विशिष्टाद्वैत' के द्वारा तथा श्री माध्वाचार्य जी महाराज (कर्नाटक) ने 'द्वैत' के द्वारा आध्यात्मिक जगत को आलोकित किया। दक्षिण भारत की पूजा मुख्यतः आगम-आधारित है, जो उत्तर भारत की वैदिक-पुराणिक पद्धति से थोड़ी भिन्न लेकिन समृद्ध है।

दक्षिण की पूजा पद्धति में सुप्रभातम (स्तुति), अभिषेक (दूध, जल, पंचामृत से स्नान), अलंकार, दीपाराधना, नैवेद्य (भोग) जैसी विधियाँ सम्पन्न की जाती हैं। मन्दिरों के गर्भगृहों में विशेष अर्चक पुरोहितों के अतिरिक्त अन्य किसी का भी प्रवेश वर्जित रहता है। पूजन-अर्चन के समय मंत्रोच्चारण के बीच घंटियों, नादस्वरम् (शहनाई) और शास्त्रीय संगीत अनिवार्य की स्वर लहरियाँ वातावरण को अलौकिक बनाती हैं।

यहाँ के होम, याग, कुम्भाभिषेक जैसे दिव्य अनुष्ठान जहाँ एक ओर आत्मकल्याण से लेकर जगतकल्याण तक का मार्ग प्रशस्त करते हैं वहीं दूसरी और ब्रह्मोत्सव, थाई पूसम, नवरात्रि, पोंगल और महाशिवरात्रि जैसे महापर्व जीवन को श्रद्धा, भक्ति, उमंग और उत्साह से परिपूत करते हुए आध्यात्मिक ऊँचाई की ओर अग्रसर करते हैं।

दक्षिण भारत आज भी सनातन परंपरा का सबसे मजबूत केंद्र है। तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और तेलंगाना में सबसे अधिक सक्रिय मंदिर हैं। ये मंदिर देश की अर्थव्यवस्था और रोजगारों की उत्पत्ति में भी अपनी विशिष्ट भूमिका निभाते हैं। मंदिर ट्रस्टों के द्वारा संचालित अस्पताल, स्कूल, अन्नक्षेत्र जैसे सेवा प्रकल्प समाज के अभावग्रस्त वर्गों के लिए वरदान स्वरूप हैं।

इन सबके बीच एक बड़ी चिंता का विषय है जिसे दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी ने अभी अपने दक्षिण भारत के प्रवास में अनुभव किया है। वे बताती हैं कि मुगलकाल के आक्रमण दक्षिण भारत तक अपना दुष्प्रभाव नहीं दिखा सके परन्तु अब यहाँ हिन्दू-मुसलमान जनसंख्या का असंतुलन खतरनाक संकेत दे रहा है। इस प्रवास में मैंने स्वयं भी देखा है कि रामेश्वरम् और मदुरै जैसे हिन्दू शक्तिकेन्द्रों में मुस्लिम आबादी तेजी से बढ़ रही है। चारों ओर मस्जिदों और मदरसों को निर्माण हो रहा है। तमिलनाडु की वर्तमान सनातन विरोधी सरकार के बयान किसी से छुपे नहीं हैं।

इन स्थितियों में हिन्दू समाज को अपने जातिगत मतभेद भुलाकर फिर से एकजुट होना होगा। बात केवल एकजुटता से भी नहीं बनेगी। बदलते हुए 'वर्ल्ड ऑर्डर' में हमारी नई पीढ़ी को सैन्य क्षेत्र में वो तकनीकी दक्षता भी प्राप्त करनी होगी, जिसके बल पर कुछ विश्व शक्तियाँ बलात् विस्तारवाद के रास्ते पर चल रही हैं। इस समय वैश्विक स्थिति यह है कि जो शक्तिशाली है, वो कुछ भी कर सकता है। हम 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना वाले एकमात्र देश हैं और अतिक्रमण हमारी संस्कृति नहीं है परन्तु हमें अपने धर्म और राष्ट्र की रक्षा के संदर्भों में अपने दिमागों की खिड़कियाँ तो खुली रखनी ही होंगी।

ज्ञानी को कुछ नहीं चाहिए

- युगपुरुष स्वामी परमानन्द जी महाराज

ना दीपक का नाम ज्योति है, ना बाती का नाम ज्योति है और ना ही तेल का नाम ज्योति है। उन तीनों में तीनों के सहारे जो प्रकाश है जिसे अंधेरा दूर होता है, उसका नाम ज्योति है। तो ये शरीर दीपक है, मन तेल है और श्वाँस बाती के समान है। तो ज्योति के लिए यहाँ जैसे तीन स्पष्ट हो गए दीपक, तेल और बाती। दीपक के रहते भी तेल ना हो तो भी ज्योति जलाना संभव नहीं। ज्योति को नहीं रख सकते। उसके रहने के लिए बत्ती का सहारा भी चाहिए, तेल का भी। ऐसे ही सुसुप्ति में प्राण रूपी बत्ती भी हो, देह रूपी दीपक भी हो परन्तु मन रूपी तेल नहीं हो तो ज्योति नहीं जल पाएगी। और यहाँ शरीर रहते, प्राण रहते ये ज्योति अपने आप जल जाती है और अपने आप बुझ जाती है। अर्थात जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति अपने आप हो जाती है। किसी को अलग से करने नहीं आना पड़ता। आप इस ज्योति को देर तक जगाए रख सकते हैं। सदा तो नहीं, पर देर तक जगाए रख सकते हैं। इसका नाम है ध्यान। तो जगे रहना और इतना ही ध्यान रखना कि मैं जगा हुआ हूँ।

प्रकृति ने ये सबकुछ तैयार कर दिया। दीपक, बाती और तेल ये सब प्रकृति ने तैयार किया। और मैं हूँ, मैं हूँ करके ये ज्योति जलने लगी। अब ये 'मैं हूँ' के पीछे क्या है? उद्देश्य क्या है? ये समझना है। प्रकृति ने शरीर ना तैयार किया होता तो ये ज्योति कहाँ जलाते? इस शरीर में प्राण नहीं होता तो कैसे आप जीवित रहते और जागते? जीव एक ज्योति है जो इस देह में बैठी है और ये जीव अपने को अधूरा मानता है। दुखी है। सुख चाहिए। पति पत्नी सदा नहीं चाहिए, सुख सदा चाहिए। कपड़ा एक जैसे नहीं चाहिए। बिल्डिंग एक जैसी, कमरा एक जैसा सदा नहीं चाहिए। बस सुख सदा चाहिए। माला सदा नहीं चाहिए, पर मान चाहिए। धन सदा नहीं चाहिए, मान चाहिए। पद सदा नहीं चाहिए, सम्मान चाहिए। मान कभी भी किसी को बुरा नहीं करता। मान लेने की पद्धति से उठता जाता है। उसमें मुझे औरों से गवाही नहीं चाहिए, मुझे खुद गवाही है। यानी पैर छूने से मैं उठता जाता हूँ। पर उसे पैर मान के कारण छुआना अच्छा लगता है। ऐसे ही मालाओं से मैं उठता जाता हूँ। अर्थात ये सब कुछ एक 'डीप डिजायर' है। स्त्री चाहिए, कपड़ा चाहिए, बिल्डिंग चाहिए। ये अधिक चाहिए, अधिक ये अधिक सिर्फ दिखता है। असल में सिर्फ चाहिए मान। सिर्फ चाहिए सुख। सिर्फ चाहिए जीवन। उस गहराई को समझे और कोई इच्छा क्यों पूरी नहीं? अमर होने की इच्छा शरीर से पूरी होगी? सुखी होने की इच्छा भोगों से पूरी होगी? आवश्यकता तो पूरी होगी। कपड़ा आवश्यकता है। भोजन आवश्यकता है। उसको बिल्कुल नहीं छोड़ना। जो ये समझाते हैं बिल्कुल मूर्ख हैं। इतना धन आवश्यक है या धन से आवश्यक वस्तुएँ मिलती हैं। कपड़ा आवश्यक है, धन नहीं। भोजन आवश्यक है, धन नहीं। मकान आवश्यक है, धन नहीं। पर ये धन से मिलते हैं इसीलिए धन भी आवश्यक है। तो आवश्यक है ये पूर्ति करो। ये सहज है, बच्चा भी पूरी करेगा, पागल भी पूरी करेगा। साधु भी पूरी करेगा।

साधु नहीं पूरी करता सुख की इच्छा। तो क्या करता है? उसकी पूरी हो गई है। वो जीने की इच्छा पूरी नहीं करता। वो अमर है। वो जागने की इच्छा पूरी नहीं करता। जीने की और जागने की भी इच्छा पूरी नहीं करता। जब मृत्यु की बात है। क्योंकि वो अजर है, अमर है। और उसकी चैतन्य ज्योति बुझती नहीं है। उसका चैतन्यपना कभी खत्म नहीं होता। इसलिए चैतन्य रहने की भी उसे जरूरत नहीं है। इसलिए उसे सतोगुण नहीं चाहिए। उसे रजोगुण नहीं चाहिए। उसे तमोगुण नहीं चाहिए। आपको तमोगुण चाहिए। आपको रजोगुण चाहिए। अभी आपको सतोगुण चाहिए। क्यों? क्योंकि सतोगुण से सुख मिलता है। सतोगुण से सुख मिलता है, बिना किए या थोड़ा ध्यान करने से ज्यादा नहीं। थोड़ा सुमिरन करने से, थोड़ा अंतर्मुख होने से, ज्योति के दर्शन से, कुंडलिनी के जागने से, भजन करने से, कीर्तन करने से सुख का अनुभव होता है। ये सतोगुण है। इसीलिए सतोगुण भी सुख में बाँधता है। सुखी रहने को सतोगुण चाहिए। और रजोगुण कहता है ये करो तो सुख

मिलेगा, ये करो उससे मिलेगा, पद से मिलेगा काम से मिलेगा मान से मिलेगा। सुख के लिए रजोगुण दौड़ाता है। और तमोगुण? इतनी झंझट कौन करे। आलस्य में भी थोड़ा सुख। काम करना झंझट लगता है। सबके पीछे इच्छा वही है गहरी। सुखी होने की, जीने की, बड़े होने की, जिसको बड़ा होना बाकी ना रह जाए। जिसको सुखी होना बाकी ना रह जाए। जिसको बार-बार कुछ पाने की जरूरत ना रह जाए। बार-बार क्या पाते हो? सुख किससे? गा करके, नाच करके, हँस करके, लड़ करके, झगड़ करके, बिल्डिंग बढ़ा करके, काम बढ़ा करके, सोना बढ़ा करके? क्या ढूँढ रहे हो? यदि आपको बड़े होने की जरूरत नहीं है, जगने-सोने की नहीं है, सुख की नहीं है, जीने की नहीं है तो क्यों फाँसी लगा रहे हो? क्यों जहर खा रहे हो? हम कुछ छोड़े किसी को क्यों? हम नींद भी क्यों हटाएँ? हम जागना क्यों लाएँ? अब जागने से भी हमें क्या लेना देना है? ये जब आते हों आ जाएँ।

रजोगुण आता है, रजोगुण जाता है। तमोगुण आता है, तमोगुण जाता है। सतोगुण आता है, सतोगुण जाता है। आप राजी नहीं हैं। इसलिए ज्ञानी के यहाँ ये आते-जाते हैं। आपको जरूरत है कि जागना आए, सोना आए, नींद आए। रात भर जागते ये देखें, ये करें। करने की अभी जरूरत आपकी ओर से अज्ञान के कारण ये आवश्यकताएं आपके अपनी लगती हैं। ज्ञानी को ये अपनी लगती नहीं। शरीर की है ये मन आदि की नहीं, ये गुणों की है। एक गुण आएगा दूसरे को हटाएगा। ये दिमाग में सच है। ज्ञानी को किसी गुण की आवश्यकता नहीं इसलिए गुणातीति। तुम्हें अभी गुण चाहिए, जवानी चाहिए। ध्यान करना चाहिए, ध्यान का सुख चाहिए। अब कई को ध्यान से नहीं मिलता तो काम का सुख चाहिए। बहरहाल, सुख चाहिए। आपको बड़प्पन चाहिए, चाहे धन जोड़ के चाहिए, चाहे लंगोटी लगा करके या नंगे पैर चलके चाहिए। आपको तो प्रसिद्ध होना ही है। प्रसिद्धि की भूख है क्योंकि इतने आप महान नहीं हैं कि मैं प्रसिद्धि भी नहीं चाहिए। निर्वाण नहीं है। कोई न कोई कामना तुम्हें घसीटे हुए है। तुम निष्काम नहीं हो, निर्द्वन्द्व नहीं हो, ब्रह्म नहीं हो।

सब विकारों की जड़ है आत्मा का अज्ञान। ये तुम्हें अपनी बुद्धि में आ गया कि हम पूर्ण हैं तो बिना बुद्धि के क्या चाहोगे? सारी चाहतें बुद्धि की ज्ञान से है ना? तुम मरते नहीं हो तो अमर होने का क्या मतलब है? मरने से घबराते क्यों हो जब अमर हो? तुम सत्य हो, तुम चित्त हो, तुम आनंद हो, तुम अद्वैत हो तो दूसरे कौन हैं जिनसे जलते हो? तो ये सुनना ही नहीं। धीरे धीरे धीरे इसको कैसे जानें? सब विकारों का नाश केवल आत्मज्ञान से होता है। और सब विकारों की जड़ है ये है अविद्या। इसलिए कहा गया है कि :

प्रबल अविद्या कर परिवारा। मोह आदि तब विषय अपारा।
आतम अनुभव सुख सुप्रकाशा। तब भव मूल भेद भ्रम नाशा।।

और देखो ध्यान का सुख ध्यान क्यों? ध्यान से सुख और आप सतोगुण टिकाना चाहते हैं क्योंकि आपका सुख सतोगुण है। ध्यान दें, सुख चाहिए इसका मतलब तुम भोग के भोगी हो। सुखद स्वरूप नहीं हो और भोग के सुख पैदा किया जाता है चाहे ध्यान से, चाहे कर्म से, चाहे लड़ाई लड़ करके, चाहे गाली दे करके। तुम्हें किसी को गाली देके सुख नहीं मिलता? तमोगुणी आदमी दूसरे को नीचा दिखा के, गाली देके सुख ले रहा है। ये जितने दुष्ट हैं, हत्यारे हैं, हिंसक हैं वो ये करके सुख पा रहे हैं। एक हमने सुना था हथौड़ा वाला। बरसों बाद पकड़ा गया वो मारता था किसी की कनपटी में। पता ही नहीं चले कौन मारता है। बाद में जब पकड़ा गया तो कहता था मुझे किसी को मारकर मजा आता है। सिर्फ तुम हथौड़े वाले नहीं हो, गाली वाले तो हो। गाली देके नहीं मजा आता? भगवान कृष्ण भी हथौड़ा भी मारेंगे ना तो अपने आनंद में। तुम्हारी गाली भी अभी अपने सुख के लिए। जब तुम्हें नहीं सुख है वो गाली लायक काम किया तो गाली दे दी। अपनी ओर से कोई योजना नहीं है गाली की, हथौड़े की या सोने की योजना भी नहीं। जागने की भी योजना नहीं। जैसे बहुत छोटे बच्चे जागने की योजना नहीं बनाते, सोने की योजना नहीं बनाते। सोते हैं। ज्ञानी के सभी कर्म सहज होते हैं। कुछ पाना नहीं है, कुछ खोना नहीं है। जन्म भी होगा, देह भी होगा, बुढ़ापा भी होगा।

तो किसे छोड़कर सत्य को खोजना है? चुनाव को छोड़कर। जो सत्य को पा चुके हैं, वो चुनाव रहित हैं। चुनाव रहा ही नहीं। फिर भी तुम्हारी तरह चलते हैं, तुम्हारी तरह सोचते हैं, तुम्हारी तरह काम करते हैं। आपके हर काम के पीछे कुछ पाना है। पेड़ फूलता है, पेड़ फलता है, पेड़ बढ़ता है, पेड़ की क्या योजना है? जो कुछ योजना होगी किसी और की होगी। पेड़ की कोई योजना नहीं। जमीन की कोई योजना नहीं कि आप बीजो या जुताई करो। किसकी है? यहाँ प्रकृति की योजना है और मेरी कोई योजना नहीं। बूढ़ा करने की योजना, जवान करने की योजना किसकी है? पर उस योजना में तुम इंटरेस्टेड हो। उस योजना में तुम डरते हो। इस प्रकृति की योजना में जो मौत आती है, राजी होना। और इस योजना में जवानी आती है, इंटरेस्टेड हो या नहीं?

ज्ञानी असंग है, अलिप्त है, पूर्ण है इसलिए कोई कमी नहीं है। इसलिए ज्ञानी हर शोक से रहित है। तो अभी आप उस ज्ञान को प्राप्त करने आए हैं, पर उसके लिए थोड़ा ध्यान करें। क्योंकि उसको समझने के लिए भी शांत चित्त चाहिए। ये ज्ञान प्रिय को, पुत्र को, शांत को, चरित्रवान को देना है। कामना जो फल पाने की करके काम करते हैं, वो जल्दी ज्ञान को उपलब्ध नहीं होते। इस ज्ञान को पाने के लिए शांत चित्त चाहिए, निष्काम चित्त चाहिए। तो कामी को तो सुख वहाँ नहीं दिखेगा। अभिमानी को तो सुख वहाँ नहीं दिखेगा, अंदर झाँकने का मौका ही नहीं मिलेगा। सुख स्वरूप हो, अंदर ही सुख भंडार है, खोजने को बैठोगे क्या? बैठोगे? ध्यान में भी नहीं बैठोगे। तत्व का अनुसंधान ही नहीं करोगे, सुख का अनुसंधान करोगे और सुख तुम्हें बाहर दिखता है। ध्यान रखो कि निष्काम कर्म से चित्त शुद्ध होता है और शुद्ध चित्त ही सच्चे सुख का अनुसंधान कर सकता है।

अवतार की प्रतीक्षा मत करो हिन्दुओं स्वयं अवतारी बनो...

- दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा

पिछले कुछ वर्षों में हमने भारत में एक सकारात्मक राजनैतिक परिवर्तन को देखा है। हिन्दू समाज की एकता ने इस देश की बागडोर ऐसे राजनैतिक दल को सौंपी, जिसकी विचारधारा न केवल राष्ट्रवाद का पोषण करती है बल्कि सनातन सांस्कृतिक जीवन मूल्यों का संरक्षण और संवर्धन भी करती है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारकों और स्वयंसेवकों की निःस्वार्थ कर्मनिष्ठा और दृढ़ संकल्प इस परिवर्तन की नींव हैं। मुझे यह कहते हुए कोई संकोच नहीं है कि यदि संघ की कई पीढ़ियों ने अपने आपको इस राष्ट्र यज्ञ में आहूत न किया होता तो अब तक सनातनियों का यह एकमात्र देश अब तक बड़े संकट में फँस गया होता। बहुत संतोष का विषय है कि आज भारत की स्थिति वैश्विक स्तर पर सशक्त है। वह बड़ी-बड़ी महाशक्तियों की आँख में आँख डालकर उन्हें उत्तर देने की सामर्थ्य रखता है। परन्तु यही सावधान रहने का समय भी है क्योंकि अत्याधिक निश्चिंतता भी समाज को लापरवाह बनाती है। हिन्दू समाज की भी इस समय यही स्थिति है। सनातन संरक्षक सरकारें तो अपना काम कर ही रही हैं, हिन्दू समाज को भी अपनी एकजुटता ऐसे ही बनाये रखनी है। हिन्दू समर्थक सरकारें केन्द्र और अनेक राज्यों में हैं परन्तु यह भी नहीं भूला जाना चाहिए कि पश्चिम बंगाल और केरल जैसे सीमान्त राज्यों में हिन्दुओं पर किस प्रकार से अत्याचार किये जा रहे हैं।

अपनी रक्षा के लिए सदैव सजग रहना चाहिए। जो हमारी रक्षा के लिए काम कर रहे हैं, उनका भी ध्यान रखा जाना चाहिए। जब समाज पीछे सहयोग में खड़ा नहीं होता तो उनका मनोबल टूट जाता है। धर्म की रक्षा में सभी लोग अपना सबकुछ नहीं दे सकते।

मेरा यौवन अपना तन देगा
मेरा मुनि मंडल मन देगा
जीवन के मूल्य चुकाने को
मेरा भामाशाह धन देगा।

अगर कोई हिन्दू कार्यकर्ता धर्म की रक्षा करते हुए किसी कानूनी पचड़े में पड़ा है और उसके पास इसके लिए धन नहीं है तो समाज के समर्थ लोगों को उसकी सहायता के लिए आगे आना चाहिए। आप जाने कितने भण्डारों में आर्थिक सहायता देते हो परन्तु वो जमीनी कार्यकर्ता, जो जूझ रहा है, उसके कोर्ट के जो खर्चे हैं उसकी व्यवस्था भी समाज ने करनी चाहिए। इसीलिए आपको इस बात का ध्यान रखना है कि आपको अपनी कमाई का 'धर्मांश' अपने धर्म की रक्षा के लिए सन्नद्ध ऐसे कार्यकर्ताओं हेतु निकालना चाहिए। आपको मालूम है कि ये जो लड़ाई हो रही है, ये पैसे के बल पर हो रही है। विधर्मियों का अरबों रुपया सनातन के विरुद्ध प्रयोग किया जा रहा है। और हमारे यहाँ छोटे-छोटे सामाजिक कामों लिए पूरी जिंदगी खपानी पड़ती है। एक प्रकल्प चलाने के लिए जान खपानी पड़ती है। तो आप ये देखना है कि आपका धन जहाँ आपने समर्पित किया, उसका क्या उपयोग हो रहा है। आपको देश की सरकारों का नाक में दम करना चाहिए कि अगर वैष्णोदेवी में हमारा चढ़ावा चढ़ रहा है तो उस चढ़ावे से आप विधर्मियों को अफसर क्यों बनाओगे? आप क्या सोचते हो, आपकी कोई चिंता करने वाला है? आपकी कोई चिंता नहीं करेगा। तिरुपति बालाजी जैसे मंदिर में हिंदुओं का जो अरबों रुपया चढ़ता है, यदि वो केवल हिंदू के धर्म प्रचार में या वनवासियों के कल्याण में लगेगा तो धर्मांतरण रुक जाएगा।

आपको एक वोट बैंक के रूप में सरकारों पर दबाव बनाना चाहिए कि जब मुसलमानों की जकात केवल उनके कल्याण में लगाई जाती है और चर्चों में दान आई राशि केवल हिन्दुओं के धर्मांतरण में लगाई जाती है तो हम हिन्दू क्या मूर्ख हैं, जो हमारे मंदिरों के दान का विधर्मियों के कल्याण में खर्च किया जा रहा है? सरकारों से पूछा जाना चाहिए कि हमारी मेहनत की कमाई, जो हमने देवों के सामने चढ़ाई, उसका उपयोग तुम उनके लिए क्यों कर रहे हो, जो हमारे शत्रु होकर हमारे कत्लेआम की योजनाएँ बना रहे हैं।

आपको कोई अधिकार नहीं है कि मंदिरों में भगवान को भेंट किया गया हमारा धन आप ऐसे विधर्मियों के लिए खर्च करो। जब तक हिंदू समाज एकजुट होकर इस आवाज को आसमान तक नहीं ले जाएगा, तब तक हमारे ही धन का उपयोग हमारे ही विरुद्ध होता रहेगा। और याद रखना कि ये लड़ाई पैसे की है। 'हलाल' के नाम का पैसा, 'जकात' के नाम का पैसा, ये सब मिलकर भारत के पूरे सीमाओं को घेर रहे हैं। आप देखो कि किस प्रकार से उनके कुचक्र सारे देश को घेर रहे हैं। बंगाल में बाबरी मस्जिद का निर्माण हो रहा है, एशिया का सबसे बड़ा चर्च पंजाब में बना है और मुझे दक्षिण भारत की तो बात ही नहीं करनी, किस प्रकार से वहाँ मुस्लिम जनसंख्या बढ़ रही है, आपके सामने है।

अभी मैंने रामेश्वरम् प्रवास के दौरान उस 'बाणगंगा' के दर्शन किए, जहाँ पर प्रभु श्रीराम ने जानकी की प्यास बुझाने के लिए तीर चलाकर समुद्र किनारे एक कुएँ के रूप में मीठा जल प्रकट किया था। यदि ये किसी और धर्म का स्थान होता, तो अब तक वहाँ एक भव्य धर्मस्थल खड़ा होता। हम हिंदू अपने बच्चों के लिए अनेकों उत्सव मनाते हुए कितना धन बर्बाद करते हैं या तो फिर आप भंडारे करते हैं परन्तु धर्म की रक्षा के लिए आप क्या करते हैं? भण्डारों की लाइन लगी है। लोग एक भण्डारे से दूसरे में जा रहे हैं। पत्तलों में जूठा छोड़ रहे हैं। क्या इससे आपको पुण्य मिलेगा? क्या भरे पेट लोगों को भोजन कराना पुण्य का काम है? नहीं। ये केवल मूर्खता है। दीपक वहाँ जलाओ, जहाँ अंधेरा है।

यदि आप धनवान हैं, कुलीन हैं, साधन सम्पन्न हैं तो फिर आपकी बड़ी जिम्मेदारी बनती है कि आप हिन्दू समाज की चिंता करें। दूसरी बात ये कि आप अपने उन बच्चों पर बड़ा गर्व करते हैं जो विदेशों में अपनी सेवाएँ देकर 'डालर' कमा रहे हैं। कभी आपने गंभीरतापूर्वक इसके परिणाम पर विचार किया? 'मेरा बेटा है ऑस्ट्रेलिया में है, मेरी बेटी कनाडा में है, मेरा बच्चा लंदन में है' इसका अर्थ क्या है? भारत की सारी प्रतिभा भारत से निकलकर बाहर बसेगी और फिर भारत का क्या होगा? देश की प्रतिभा का उपयोग देश के लिए ही होना चाहिए। बच्चों के पालकों के साथ-साथ सरकारों और निजी संस्थानों का भी दायित्व है कि वो अच्छी वेतन सुविधाएँ देकर भारत से प्रतिभाओं के पलायन को रोके, ताकि उनका उपयोग राष्ट्र कल्याण के लिए हो सके। इसके बाद 'सामाजिक समरसता' का एक और विषय गहन चिंतन का है। श्रीरामजन्मभूमि आंदोलन के समय एकजुट हुए हिन्दू समाज को तोड़ने का षडयंत्र इन दिनों चल रहा है। कभी आरक्षण के बहाने तो कभी सवर्ण और दलित संघर्ष को प्रस्तुत करके। सोशल मीडिया पर इसका प्रचार कुछ ज्यादा ही हो रहा है। इसको हवा मत दीजिए। ये योगी और मोदी को बदनाम करने का षडयंत्र है। सावधान हो जाइए और इसके शिकार आप मत बनिये। दूसरी बात ये है कि देश और धर्म का भला चाहने वाले 'योगी' और 'मोदी' के रूप में केवल दो व्यक्ति ही क्यों? हर घर में योगी पैदा हो, हर घर में मोदी पैदा हो। मैं निवेदन करना चाहती हूँ आपसे कि :

हम यदि आपस में बट जाएंगे
हिंदू चेतना से बिंदु धुंधलाएंगे
वाल्मीकि सीता को कैसे निभाएंगे
राम शबरी के बैर कैसे खाएंगे
हरिजन सवर्ण और पिछड़ों के नाते
इन्हें तोड़ने की जो साजिश रचाते
उन्हें हम धूल में मिलाके रहेंगे
हम हिन्दू राष्ट्र बनाके रहेंगे।

देश के कई प्रांतों में हिन्दू अल्पसंख्यक हो गया है, इस चिंता में आपकी रातों की नींद उड़ जानी चाहिए। मंदिरों में जाओ, भजन गाओ और फिर भंडारा खाकर घर में सो जाओ, इससे उद्धार होने वाला नहीं है। आप अपने मंदिरों को चिंतन-मनन का केंद्र बनाओ। स्त्रियों के बल पर धर्म चल रहा है। पुरुषों को तो मंदिर जाने में शर्म आती है। आपकी हिंदू होने की निशानी क्या है? क्या आपके माथे पर तिलक है? क्या आपके सिर पर चोटी है? क्या आपने जनेऊ धारण किया है? नहीं। आपको देखकर कोई नहीं बता सकता कि आप कहाँ के स्त्री या पुरुष हो। अपनी पहचान के साथ जियो, अपनी भाषा, अपनी वेशभूषा और अपनी परम्पराओं के साथ जियो।

ध्यान रखना की प्रत्येक खेती के दौरान बहुत सारी खरपतवार भी पैदा होती है। यदि उसे समय पर न उखाड़ा जाए तो फिर वो मूल फसल का नष्ट कर डालती है। सावधान हिन्दुओं! इस देश में भी आतंकी विधर्मियों के रूप में बड़ी 'खरपतवार' पैदा हो गई है, जिसको समय रहते नष्ट करना होगा। मैं देश के कर्णधारों से भी कहना चाहती हूँ कि केवल देश का 'इंफ्रास्ट्रचर' मजबूत करने से ही सबकुछ नहीं होगा। आज यूरोप के अनेक विकसित देशों में शरणार्थी मुस्लिमों ने आतंक फैलाना शुरू कर दिया है। हिन्दुओं! अपनी जनसंख्या नहीं बढ़ाओगे तो एक दिन आज के अल्पसंख्यक कल के बहुसंख्यक बनकर तुम्हारे 'विकास' पर कब्जा कर लेंगे। हमेशा अवतारों की प्रतीक्षा मत करो बल्कि स्वयं अवतारी बनो। अपने उद्धारक स्वयं बनो। अपने सहायक स्वयं बनो। संगठित रहो और सुरक्षित रहो।

आधुनिक महाभारत का युद्ध अवश्यंभावी

भाग–2 - भानुप्रताप शुक्ल

(यह लेख नवम्बर, 1990 में लिखा गया है)

(गतांक का शेष...)

खिलाफत आंदोलन के कठमुल्लापन का भारत के राजनेताओं ने समर्थन किया तो मुसलमानों ने भारत की मुख्य धारा में शामिल होकर भारतीय बन जाने की बात नहीं सोची, उसके कारण उनके मन की भूमि पर एक मुस्लिम भारत का उदय हुआ था। उन्हें भारत की भूमि पर एक मुस्लिम राष्ट्र बनाने की प्रेरणा प्राप्त हुई थी और बाद में पाकिस्तान के रूप में उन्होंने अपनी कल्पना का मुस्लिम राष्ट्र प्राप्त भी कर लिया था।

समस्या मुसलमानों की नहीं है, समस्या है भारत में धर्म निरपेक्षता (सर्वधर्म समभाव) और राष्ट्रीय अस्मिता को अक्षत रखने की। हिन्दू राष्ट्रीय अस्मिता के साथ रचा-बसा समाज है। उसको सबके साथ रहना और जीना आता है। इस संदर्भ में श्री प्रभाष जोशी का यह उद्धरण लम्बा तो है किन्तु सार्थक है कि 'यदि वैज्ञानिक और वस्तुपरक समझ से भारत को देखा जाए तो हम पाएंगे कि इस देश और उसके लोगों ने सबसे ज्यादा सम्प्रदायों को जन्म दिया है और मजहबी अल्पसंख्यकों को बरतने का सबसे ज्यादा अनुभव भी इसी देश को है। यहूदी धर्म से निकले हैं ईसाई और इस्लाम मजहब, जबकि जिसे हिन्दू धर्म कहा जाता है इससे निकले हैं बौद्ध, जैन और सिख। इन तीनों ही मजहबों को मानने वाले लोग हिन्दुओं में से निकले हैं। हिन्दू धर्म अपनी प्रकृति से भिन्न इस्लाम के साथ नौ सौ सालों से और इसाईयत के साथ कोई चार सौ सालों से सह-अस्तित्व किए हुए हैं, जबकि यहूदी धर्म से निकले ईसाई और इस्लाम ऐसा अस्तित्व नहीं रख पाए।'

अगर हिन्दू धर्म दूसरों के प्रति असहिष्णु और अल्पसंख्यकों को ठुकराने वाला होता, यह एक मजहब की तरह समाप्त हो जाता या विधर्मियों को अपने देश से बाहर कर देता लेकिन उसने ऐसा नहीं किया बल्कि बुद्ध, महावीर और नानक को अपने धार्मिक पुरुषों की तरह स्वीकार कर लिया। ऐसे सर्वसमावेश धर्म से अंग्रेजों ने बराबर दूरी बनाए रखी। भारत और भारतीय समाज को संगठित मजहबी

समुदाय में देखने की दृष्टि गैर भारतीय है और यह अंग्रेजों की देन है।

हिन्दुओं में द्वैत ही नहीं, अनेकतावाद भी है। कई देवता, कई अवतार, कई कर्मकाण्ड और कई सम्प्रदाय हिन्दुत्व की लगभग पहचान बन गए हैं और यह कोई अंग्रेजों के आने के बाद नहीं हुआ। हजारों साल से है और इस अनेकता में ही हमने ऐसी सांस्कृतिक एकता विकसित की है जो किसी भी देश और समाज ने नहीं की। अंग्रेज या तो इस सांस्कृतिक एकता को समझ नहीं पाए या उन्होंने जानबूझकर अनेकता और आपसी विभाजन पर जोर दिया, ताकि शारीरिक रूप से वे खुद और राजनीतिक रूप से उनका साम्राज्य सुरक्षित रह सके। इस देश में हिन्दू बहुमत के प्रति अंग्रेजों का रवैया अभी तक चल रहा है।

आखिर क्यों राम और कृष्ण की जन्मभूमियों और शंकर की नगरी में काशी विश्वनाथ मंदिर के मामले लटकाए रखे गए हैं? 1857 में हिन्दू और मुसलमान नेताओं ने मिलकर तय कर लिया था कि अयोध्या में मस्जिद अलग बना ली जाएगी लेकिन अंग्रेजों ने तय करने वालों को फाँसी दे दी। अगर सवा सौ साल पहले यह मामला निपट सकता था तो आजादी के बाद क्यों नहीं? अयोध्या, मथुरा और काशी को लेकर मुसलमानों की कोई भी ईमानदार शंकाएँ नहीं हैं। आखिर वे भी इसी देश में रहते हैं और हिन्दू कथा, पुराण और इतिहास को जानते हैं। दोनों तरफ के लोगों को बैठाकर मस्जिदों को हटाने का निश्चित ही समझौता किया जा सकता है। अदालतों में मामले, लेने-देने और ताले लटकाने से तो दोनों सम्प्रदायों में कटुता ही बढ़ेगी।

किन्तु यह होगा नहीं। इसे होने ही नहीं दिया जाएगा। केवल इसलिए कि इस प्रक्रिया से यहाँ के मुसलमान भारत की मुख्यधारा के जलकण बनते हैं और मुसलमानों को इस देश की मांस-मज्जा बन जाना भारत के शासकों की सत्ता-राजनीति को रास नहीं आता। इसी कारण अयोध्या में राम जन्मभूमि पर खड़े हुए ढाँचे को वे मंदिर तो मानते हैं लेकिन राम मंदिर का जीर्णोद्धार नहीं करने देते और मस्जिद के नाम पर जिस ढाँचे की रक्षा के लिए सेना तैनात करते हैं और सुरक्षाबलों के द्वारा मुसलमानों की मस्जिदी आस्था की लड़ाई लड़ते हैं, उसको मस्जिद होने की खुली घोषणा करके मुसलमानों को सौंप देने का साहस भी नहीं दिखाते।

शासक और राजनेता यह विवाद अनन्त काल तक केवल इसलिए बनाए रखना चाहते हैं कि भारत का राष्ट्रीय जीवन सदा अस्थिर और आतंकित बना रहे। राष्ट्रीय समस्याएँ हिन्दू-मुस्लिम समस्याएँ बनी रहें और ये वोट राजनीति की अपनी गोटी लाल करते रहें। साम्प्रदायिक सद्‌भाव, सामाजिक अभिसरण और समान राष्ट्रीय, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक बोध उत्पन्न करने वाली प्रत्येक विधा और विचार को मुस्लिम विरोधी और हिन्दू संप्रदायवाद बताकर बदनाम करने के पीछे स्वार्थपूर्ण सत्ता राजनीति के अतिरिक्त और कोई बात है ही नहीं।

हिन्दुओं की अपेक्षा मुसलमान जितना शीघ्र यह तथ्य समझ लेंगे, उतना ही शीघ्र ये अल्पसंख्यकवाद से मुक्त होकर भारत राष्ट्र के परम्परागत नागरिक के रूप में अपने राष्ट्रीय कर्तव्य का निर्वाह कर सकेंगे। आपसी सद्‌भाव और राष्ट्रीय बोध के बीच में एक जर्जर खण्डहर और कुछ हजार ईंटों का मलबा ही तो है। मुसलमान आक्रमणकारियों और बादशाहों द्वारा तोड़े गए हजारों देवालयों में से देश के सत्तर करोड़ हिन्दू केवल तीन ही स्थान तो मांगते हैं। क्या अपने राष्ट्र में उनका इतना अधिकार भी नहीं है कि वे अपने परमात्मा स्वरुप महापुरुषों की पूजा और उनका सम्मान कर सकें। यदि नहीं तो आधुनिक महाभारत का युद्ध अवश्यंभावी है। यह युद्ध आज हो या कल; इसे टाला नहीं जा सकता।

('भानुप्रताप शुक्ल समग्र' खण्ड 2 से साभार)

हिन्दुओं की अपेक्षा मुसलमान जितना शीघ्र यह तथ्य समझ लेंगे, उतना ही शीघ्र ये अल्पसंख्यकवाद से मुक्त होकर भारत राष्ट्र के परम्परागत नागरिक के रूप में अपने राष्ट्रीय कर्तव्य का निर्वाह कर सकेंगे। आपसी सद्‌भाव और राष्ट्रीय बोध के बीच में एक जर्जर खण्डहर और कुछ हजार ईंटों का मलबा ही तो है। मुसलमान आक्रमणकारियों और बादशाहों द्वारा तोड़े गए हजारों देवालयों में से देश के सत्तर करोड़ हिन्दू केवल तीन ही स्थान तो मांगते हैं। क्या अपने राष्ट्र में उनका इतना अधिकार भी नहीं है कि वे अपने परमात्मा स्वरुप महापुरुषों की पूजा और उनका सम्मान कर सकें। यदि नहीं तो आधुनिक महाभारत का युद्ध अवश्यंभावी है। यह युद्ध आज हो या कल; इसे टाला नहीं जा सकता।

श्री रामेश्वरम् धाम में श्रीराम कथा मंदाकिनी प्रवाहित हुई

रामेश्वरम् धाम, तमिलनाडु

विगत 1 से 7 फरवरी 2026 तक पावन तीर्थनगरी श्री रामेश्वरम् धाम में परमशक्ति पीठ द्वारा आयोजित सप्त दिवसीय श्रीराम कथा महोत्सव सम्पन्न हुआ। विश्व भर के कोटि-कोटि सनातन समाज के इस आस्था केन्द्र के लक्ष्मण कुण्ड स्थित वर्धनी महल परिसर में पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी ने व्यासपीठ पर विराजमान होकर सात दिनों तक श्रीराम कथा का गुणगान किया। देश भर से पधारे लगभग 300 श्रद्धालुओं ने इस समागम में भाग लेकर अपना जीवन धन्य किया। परमशक्ति पीठ द्वारा चारों धामों में इस प्रकार के आयोजनों की संकल्प पूर्ति का यह प्रथम चरण था।

कथा महोत्सव का प्रारंभ 1 फरवरी को पूज्या दीदी माँ जी एवं मुख्य यजमानों द्वारा श्री रामेश्वरम् धाम दर्शन के साथ हुआ। श्री राजेंद्र भगेरिया और श्रीमती कंचन भगेरिया ने श्रद्धापूर्वक अपने शीश पर श्री रामचरित मानस को धारण कर उन्हें कथा स्थल की व्यासपीठ पर विधिपूर्वक विराजमान किया। इसके पश्चात् प्रतिदिन प्रातः 9 से दोपहर 12 बजे तक पूज्या दीदी माँ जी के पावन श्रीमुख से श्रीराम कथा की ज्ञानगंगा प्रवाहित हुई।

कथा महोत्सव में देश भर से भाग लेने हेतु पधारे श्रद्धालुओं के लिए वर्धनी महल एवं निकटस्थ होटलों में आवास व्यवस्था का प्रबंध किया गया था। प्रतिदिन जलपान, दोपहर एवं रात्रि भोजन की सुन्दर व्यवस्थाएँ वर्धनी महल के भोजनालय में की गई थीं। दोपहर भोजन के बाद कथा सदस्यों के देवदर्शन भ्रमण की व्यवस्थाएँ भी अनेक वाहनों के द्वारा की गई थी। जिनमें प्रमुख रूप से श्री रामनाथ स्वामी मंदिर, अग्नितीर्थ, बाणगंगा, धनुषकोड़ी, श्री रामसेतु दर्शन, श्री लक्ष्मण मंदिर, श्री मंगलनाथर स्वामी मंदिर, मणिकावासका मंदिर, श्री आदिजगन्नाथ पेरुमल मंदिर, अरुल मिकु नवभाषण नवग्रह मंदिर तथा डॉ.ए.पी.जे.अब्दुल कलाम मेमोरियल जैसे अनेक स्थानों का दर्शन श्रद्धालुओं ने किया।

श्रीराम कथा महोत्सव के सौभाग्यशाली यजमान

कथा महोत्सव के मुख्य यजमान रहे मुम्बई निवासी श्री राजेन्द्र भगेरिया एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती कंचन भगेरिया।

दैनिक यजमानों के रूप में श्रीमती शांति अग्रवाल एवं श्री आई.सी.अग्रवाल (जयपुर), श्रीमती सिंपल अग्रवाल एवं श्री कैलाश अग्रवाल (जयपुर), श्रीमती कविता रोहरा एवं श्री मनोहर रोहरा (ग्वालियर), श्रीमती भगवती देवी गोयल एवं श्री शिवकुमार गोयल (जयपुर), श्री अशोक सरीन (दिल्ली), श्री रविकांत गर्ग (मथुरा), डॉ.हर्षा जानी एवं श्री रजनीकांत जानी (लन्दन) ने इस अनुष्ठान में विधिपूर्वक पूजन-अर्चन करते हुए भाग लेकर स्वयं की धन्यता को अनुभव किया।

श्रीराम कथा में विशेष उपस्थिति

श्री रामेश्वरम् धाम में सम्पन्न हुए इस कथा अनुष्ठान में विशेष रूप से श्री संजय भैयाजी, साध्वी साक्षी चेतना जी, साध्वी चैतन्य सिंधु जी, श्री सी.बी.पाटोदिया, श्री आई.सी.अग्रवाल, श्री शिवकुमार गोयल, श्री पवन शर्मा, श्री गुणेंद्र मेड़तिया, श्री जयभगवान अग्रवाल, श्री पी.डी.अग्रवाल, श्री अनिल सिंघल, श्री त्रिलोकीनाथ गोयल, श्री प्रभास्कर राय, डॉ. जनक आनंद, श्री उमेश गुप्ता, डॉ.सोमा नैयर, श्री शशि नैयर, डॉ.हर्षा जानी, श्री रजनीकांत जानी, श्री रविन्द्र कुमार यादव, श्री राजकुमार पोद्दार, श्री रविकांत गर्ग, श्रीराम ऋषि जिंदल, श्री जयवीर यादव, श्री चन्द्रशेखर अवस्थी, श्री राजेश मडियारामा, श्री प्रकाश अग्रवाल, श्री प्रहलादराय गर्ग, श्री विश्वनाथ शर्मा, श्री राजेश गुप्ता, श्री सुरेन्द्र अग्रवाल, श्री निरंजन शर्मा, श्री राजेश खंडेलवाल, श्री नगीन गुप्ता, श्री विक्रम चोयल, डॉ.संगीता, कैप्टन हरिहर शर्मा, श्रीमती विजयलक्ष्मी, श्री जगदीश मित्तल, श्री सुशील गोयल दिल्ली एवं श्री सतवीर शर्मा ने आयोजन में भाग लिया।

श्रीराम कथा में विशेष योगदान

आयोजन में पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी के पावन सानिध्य एवं श्री संजय भैयाजी, श्री जयभगवान अग्रवाल तथा साध्वी साक्षी चेतना जी के मार्गदर्शन में :

साध्वी शिरोमणि जी *(संयोजिका)*, साध्वी सत्यश्रुति जी एवं श्री बी.आर.सिंगला *(कार्यालय व्यवस्था)*, सुश्री स्वास्तिका जी *(केन्द्रीय कार्यालय/अर्थव्यवस्था)*, स्वामी सत्यश्रवा जी *(यातायात व्यवस्था)*, साध्वी सत्यश्रद्धा जी, साध्वी सत्यव्रता जी, साध्वी सर्वसिद्धा जी, साध्वी सत्यध्वनि जी, साध्वी सत्यप्रभा जी, साध्वी शांभवी जी, साध्वी सत्य सदानंदा जी, साध्वी सत्यसिंधु जी एवं साध्वी सत्यभाषिणी जी *(आवास व्यवस्था)*, स्वामी सत्यश्रेय जी *(भोजन व्यवस्था)*, स्वामी सत्यशील जी *(श्रीराम कथा व्यवस्था)*, साध्वी सत्यनिधि जी *(पूजन, झाँकी और उत्सव व्यवस्था)*, साध्वी साध्या जी *(कथा में प्रसाद व्यवस्था)*, स्वामी सत्यआलोकानंद जी *(कथा मंडप में बैठक व्यवस्था)*, साध्वी सत्यसमिधा जी *(मंच संचालन और आरती)*, श्री देवेन्द्र शुक्ल *(मीडिया व्यवस्था)*, श्री रंगनाथ सोनी *(वीडियो एवं फोटोग्राफी व्यवस्था)*, श्री रामजी यादव तथा श्री रामकिशन शर्मा *(कार्यालय सहयोगी)* ने अपना-अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान किया।

प्रभु श्रीराम
अपने शत्रु को मारते भी हैं और तारते भी हैं

श्रीराम कथा, रामेश्वरम्, तमिलनाडु

- दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा

रामेश्वरम् धाम तीर्थ की इस पावन धरा पर सम्पूर्ण भारत और विदेशों से जितने भी भक्तजन यहाँ कथा में सम्मिलित होने आए हैं, मैं आप सबका स्वागत करती हूँ। आपका स्वागत है क्योंकि आप स्वागत के योग्य हैं। स्वागत के योग्य कौन होता है? जिसके पास धन होता है, वो भी आदरणीय होता है परन्तु जिसका धन, धर्म को समर्पित हो जाता है वो परम आदरणीय हो जाता है। अगर हमारा कोई संकल्प है तो क्या वो मात्र कहने या करने से ही पूर्ण हो जाएगा? तो हम देखते हैं कि नहीं, हम तो बड़े मनोरथ करते हैं, बहुत संकल्प होते हैं हमारे मन में लेकिन जब तक भगवान की कृपा नहीं होती, तब तक उन संकल्पों की पूर्ति नहीं होती। आप इसलिए वंदनीय हैं क्योंकि प्रभु ने आप पर कृपा करके आपको अपने धाम में बुलाया है। इस पवित्र अनुष्ठान के हमारे आज के मुख्य यजमान आदरणीय श्री राजेन्द्र जी भगेरिया और उनकी धर्मपत्नी आदरणीया कंचन जी सहित सातों दिनों के दैनिक यजमानों को भी बहुत-बहुत आशीर्वाद देती हूँ, जिनके सत्संकल्पों के फलस्वरूप हम सब श्रीराम कथा ज्ञानगंगा में निमज्जित हो रहे हैं।

अपने अपराधी, अपने अपकारी के भी दुर्गुणों में से किसी सद्गुण को देख लेने की दृष्टि प्रभु श्रीराम में ही हो सकती है, इसीलिए आज हम उनका चिंतन करने के लिए यहाँ एकत्रित हुए हैं। अपनी भार्या के सम्मान के लिए प्रभु श्रीराम इतनी सामर्थ्य रखते हैं कि उन्होंने सागर के छाती पर भी सेतु बंधवा दिया। उनके पास साधना का इतना बल है कि वो साधन सम्पन्न लंकाधिपति से भी टकरा सकते हैं। उसकी स्वर्णमयी लंका को पिघलाकर सागर की तरंगों में बहा सकने की सामर्थ्य उनके पास है। उसके बाद भी वे आकलन करते हैं कि उनसे रावण वध के रूप में 'ब्रह्म हत्या' जैसा पाप हुआ है और वे उसका प्रायश्चित भी करते हैं। ये उनका आत्म निरीक्षण है। अपने द्वारा किए गए सत्कर्मों के बीच भी कहीं न्यूनता ना रह जाए, यह चिंतन प्रभु श्रीराम से सीखना चाहिए। अगर आपको प्रीति सीखनी है तो श्रीराम से सीखिए लेकिन अगर आपको शत्रुता भी सीखनी है तो भी श्रीराम के अतिरिक्त संसार में कोई और दिखाई नहीं देता। इसीलिए वे शत्रु को मारते हुए भी दिखाई देते हैं और तारते हुए भी दिखाई देते हैं।

अद्भुत संयोग...
कथा में सपरिवार पधारे भगवान रामनाथ स्वामी

श्री रामेश्वरम् धाम के वर्धनी महल स्थित श्रीराम कथा स्थल पर 1 फरवरी को माघी पूर्णिमा के दिन एक देवदुर्लभ संयोग उपस्थित हुआ। यहाँ पौराणिक 'लक्ष्मणेश्वर मंदिर' और 'लक्ष्मण कुण्ड' स्थित है। मान्यता है कि लंका विजय के पश्चात् श्रीराम के अनुज लक्ष्मण ने रावण वध से हुए 'ब्रह्म हत्या' के पाप से मुक्ति के लिए यहाँ शिवलिंग स्थापित कर भगवान शिव का पूजन-अर्चन करते हुए कुंड में स्नान किया। तभी से यह कुंड पाप मुक्ति और शुद्धिकरण के लिए प्रसिद्ध है। परम्परानुसार यहाँ माघी पूर्णिमा के पावन अवसर पर 'थाई पूसम उत्सव' मनाया गया, जो तमिल कैलेंडर के थाई मास में पूसम नक्षत्र पर पड़ता है और प्रायः माघी पूर्णिमा के साथ यह संयोग होता है। इस अवसर पर यहाँ भगवान रामनाथ स्वामी एवं उनके संपूर्ण परिवार को एक दिव्य नौका में विहार कराया गया। पारंपरिक वाद्य यंत्रों की मंगल ध्वनियों के मध्य प्रभु की इस झाँकी का दर्शन दैवदुर्लभ था। यह परम सौभाग्य का विषय रहा कि पूज्य दीदी माँ जी के पावन श्रीमुख से प्रवाहित हो रही श्रीराम कथा में प्रभु श्री रामनाथ स्वामी स्वयं पधारे और दीदी माँ जी सहित कथा में सम्मिलित सभी भक्तों को अपने दिव्य दर्शन प्रदान किये।

माघी पूर्णिमा के पावन अवसर पर 1 फरवरी को भगवान श्री रामनाथ स्वामी का सपरिवार भव्य पालकियों में श्री लक्ष्मणेश्वर मंदिर में आगमन हुआ, जो कि कथा स्थल वर्धनी महल के ठीक सामने स्थित है। पवित्र विग्रहों का दर्शन करते हुए पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी एवं वात्सल्य परिवार। इस अवसर पर उन्होंने श्रद्धालुओं को प्रसाद ग्रहण कराया।

लक्ष्मण कुण्ड में भगवान श्री रामनाथ स्वामी के सपरिवार नौका विहार का अलौकिक दृश्य

श्री लक्ष्मणेश्वर मंदिर में श्रीविग्रहों का दिव्य दर्शन

श्रीराम कथा महोत्सव, रामेश्वरम् की नयनाभिराम झलकियाँ

श्रीराम कथा स्थल वधर्नी महल, रामेश्वरम् में पूज्या दीदी माँ जी का दिव्य आगमन एवं व्यासपीठ पूजन

मुख्य यजमान श्री राजेन्द्र भगेरिया एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती कंचन भगेरिया
व्यासपीठ पूजन के पश्चात् पूज्या दीदी माँ जी से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए।

कथा पश्चात् आरती का सुन्दर दृश्य

दीदी माँ के आशीर्वाद से हम तमिलनाडु की सनातन विरोधी सत्ता बदल देंगे

- मुरलीधरन कृष्णमूर्ति
(भा.ज.पा.नगराध्यक्ष-रामेश्वरम्)

वैसे तो मुझे बोलना नहीं आता है लेकिन दीदी माँ जी की बात सुनकर मुझे बोलना आ गया लगता है। सौभाग्य से यहाँ दीदी माँ की कथा आयोजित है और आज ये रामकथा में मुरलीधर आया है। मेरा जन्म नक्षत्र रोहिणी है, मैं जन्माष्टमी के दिन ही पैदा हुआ, लेकिन मैं अभी तक 'कंस मामा' को नहीं मारा है। कांग्रेस के कई लोग नारा बोलते हैं कि 'माँ बेटे का बलिदान, याद करेगा हिन्दुस्तान', लेकिन हम लोग बोलते हैं कि 'साधु-सन्तों का बलिदान, याद करेगा हिन्दुस्तान।' यहाँ लैंग्वेज का बड़ा प्रॉब्लम है। यात्री हिन्दी बोलते हैं और तमिल ड्रायवर्स को वो समझ नहीं आती। लेकिन इस कथा में योगदान देने वालों पर केवल और केवल दीदी माँ जी का आशीर्वाद था, इसीलिए सबकुछ ठीक से हो सका। मैं दीदी माँ जी को कहना चाहता हूँ कि आपकी अगली एक कथा श्रीलंका में होनी चाहिए। अभी कहा गया कि हम इस स्थान के मालिक हैं तो मैं कहना चाहता हूँ कि हम इसके मालिक नहीं बल्कि सेवक हैं। हम इधर सेवक रूप से काम करते हैं। इस स्थान की मालिक तो हमारी दीदी माँ हैं। दूसरी बात अभी ये दीदी ने बोली कि हम बीजेपी के नेता हैं। तो हम बीजेपी के नेता नहीं, कार्यकर्ता हैं। और मैं कहना चाहता हूँ कि तमिलनाडु के अगले चुनाव में यहाँ की सनातन विरोधी सरकार जाने वाली है। यहाँ के मुख्यमंत्री और उप मुख्यमंत्री भाजपा के साधारण कार्यकर्ता ही बनेंगे। दीदी माँ के आशीर्वाद से हम तमिलनाडु में यह परिवर्तन करके रहेंगे।

मुख्य यजमान -
श्रीमती कंचन एवं श्री राजेन्द्र भगेरिया, मुम्बई

दैनिक यजमान -
श्रीमती शान्ति देवी एवं श्री आई.सी.अग्रवाल, जयपुर

दैनिक यजमान -
श्रीमती भगवती देवी एवं श्री शिवकुमार गोयल, जयपुर

दैनिक यजमान -
श्री अशोक सरीन, दिल्ली

दैनिक यजमान -
डॉ.हर्षा एवं श्री रजनीकांत जानी, लंदन

दैनिक यजमान -
श्रीमती कविता एवं श्री मनोहर रोहरा, ग्वालियर

दैनिक यजमान -
श्रीमती सिंपल एवं श्री कैलाश अग्रवाल,

दैनिक यजमान -
श्री रविकान्त गर्ग, मथुरा

व्यासपीठ से वात्सल्य सेवा समिति, मेवाड़ के कैलेन्डर का विमोचन करते हुए पूज्या दीदी माँ जी।
साथ हैं - श्री प्रकाश अग्रवाल एवं श्रीमती अग्रवाल, उदयपुर

समुचित वर्षा हेतु सागर तट पर दुर्लभ सोमयाग यज्ञानुष्ठान

श्री रामेश्वरम् ज्योतिर्लिंग तीर्थ नगरी में समुद्र तट पर अक्षय कृषि परिवार एवं महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन द्वारा 2 फरवरी को आयोजित 'सोमयाग 2026' का दर्शन पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी एवं वात्सल्य परिवार ने किया। इस यज्ञानुष्ठान को अग्निहोत्री ब्राह्मण यज्ञाचार्यों द्वारा पर्याप्त वर्षा हेतु वैदिक वैज्ञानिक पद्धति द्वारा सम्पन्न किया जाता है। इस अनुष्ठान में वैदिक मंत्रों के सस्वर के पाठ एवं गौघृत तथा औषधीय जड़ी-बूटियों की आहुतियों के साथ हवन कुण्ड से उठती पैंतीस फुट ऊँची ज्वाला अपने साथ आकाश की ओर ऐसे तत्वों को ले जाती हैं, जो पर्यावरण शुद्धि के साथ बादलों में वर्षा का गर्भाधान कराते हैं और कुछ समय बाद उनसे पर्याप्त वर्षा होने की पूर्ण संभावना होती है। इस अवसर पर यज्ञाचार्य एवं मुख्य यजमानगण ने पूज्या दीदी माँ जी का अभिनंदन किया।

रामेश्वरम् मन्दिर के भव्य एवं दिव्य प्रासाद में
अपने शिष्य मंडल के साथ पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी

श्रीराम कथा संयोजिका साध्वी शिरोमणि जी
पूज्या दीदी माँ जी के श्रीचरणों में आशीर्वाद प्राप्त करते हुए

सेतुबंध, रामेश्वरम्

बाँधि सेतु अति सुदृढ़ बनावा। देखि कृपानिधि के मन भावा।।
चली सेन कछु बरनि न जाई। गर्जहिं मर्कट भट समुदाई।।

पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी रामेश्वरम् के धनुषकोड़ी स्थित रामसेतु के अवशेषों पर चलते हुए। यही वो स्थान है जहाँ से लंका विजय को जाते हुए प्रभु श्रीराम की सेना ने भारत से श्रीलंका तक का सेतु (पुल) बाँधा था। त्रेतायुग से कलियुग तक घटी अनेक प्राकृतिक घटनाओं के कारण यह पुल सागर में डूब गया परन्तु आज भी भारत के रामेश्वरम् तट और श्रीलंका की मन्नार खाड़ी में इसके अवशेषों का दर्शन किया जा सकता है।

धनुषकोड़ी, रामेश्वरम् स्थित राम सेतु के दिव्य क्षेत्र में भारतीय तटरक्षक बल (इंडियन कोस्ट गार्ड्स) के साथ पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी। साथ हैं - आई.सी.जी. के पूर्व उप महानिदेशक आई.जी.एच.के.शर्मा, श्री संजय भैयाजी, साध्वी साक्षी चेतना जी, साध्वी चैतन्य सिंधु जी एवं साध्वी सुहृदया गिरि जी।

रामेश्वरम् स्थित डॉ.ए.पी.जे.अब्दुल कलाम मेमोरियल पर अपने शिष्य मंडल के साथ पूज्या दीदी माँ जी

रामेश्वरम् स्थित स्वामी विवेकानन्द मेमोरियल पर वात्सल्य ग्राम की यशोदा माताओं के साथ पूज्या दीदी माँ जी

पूज्या दीदी माँ जी का दक्षिण भारत प्रवास

तमिलनाडु

रामेश्वरम् धाम में 7 फरवरी को श्रीराम कथा सम्पन्न होने के बाद पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी ने दक्षिण भारत के विभिन्न पावन स्थलों मदुरै में श्री मीनाक्षी अम्मन मंदिर, थिरुपरनकुंद्रम में मुरुगन मंदिर, श्रीरंगम में रंगनाथस्वामी मंदिर, वेल्लोर में श्री लक्ष्मीनारायणी स्वर्ण मंदिर एवं तिरुमाला में श्री तिरुपति बालाजी मंदिर दर्शन, चैन्नई स्थित श्री चन्द्रप्रभु जैन श्वेतांबर मंदिर दर्शन के साथ ही कांची कामकोटि पीठ में पूज्य जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी श्री विजयेन्द्र सरस्वती जी महाराज का आशीर्वाद प्राप्त किया। आपने तिरुपति नगर में विश्व हिन्दू परिषद द्वारा आयोजित हिन्दू सम्मेलन को भी संबोधित किया।

राष्ट्रीय स्वसेवक संघ शताब्दी वर्ष समारोह के अन्तर्गत आन्ध्रप्रदेश के तिरुपति नगर स्थित श्री दक्षिण श्रीनाथ धाम, वल्लभाचार्य मठ में विगत 11 फरवरी को 'कार्यकर्ता समावेश एवं व्याख्यान कार्यक्रम' को संबोधित करते हुए पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी। मंचस्थ हैं-संघ के वरिष्ठ प्रचारक श्री येक्काली राघुवुलु जी एवं अन्य हिन्दू संगठनों के अन्य पदाधिकारीगण।

चैन्नई में विश्व हिन्दू परिषद द्वारा आयोजित हिन्दू सम्मेलन को संबोधित करते हुए पूज्या दीदी माँ जी। मंचासीन हैं-श्री नटराजन जी (विहिप राज्य कार्यपालिक सदस्य-उत्तर तमिलनाडु) श्री एस.वी.रामन (विहिप राज्य संगठन सचिव-उत्तर तमिलनाडु) श्री बालामणि मारन (विहिप राज्य सचिव-उत्तर तमिलनाडु)

तिरुपति में पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भराजी को श्री बालाजी का विग्रह भेंट करते हुए श्रीमती मुरली अम्मा, श्री हरिकृष्ण जी एवं श्री गणपति सिंह जी। साथ हैं - राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक श्री येक्काली राघुवुलु।

श्री लक्ष्मीनारायणी गोल्डन टेंपल, वेल्लोर में पूज्या दीदी माँ जी के साथ हैं-मंदिर के प्रमुख श्री सक्ति अम्मा जी, श्री संजय भैया, श्री रमन जी, साध्वी साक्षी चेतना जी, साध्वी सत्यनिष्ठा जी एवं श्री शिवराज जी।

पूज्या दीदी माँ जी का दक्षिण भारत प्रवास

वेल्लोर, तमिलनाडु

विगत 8 और 9 फरवरी को पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी ने ऐतिहासिक नगर वेल्लोर और श्रीरंगम् में प्रवास किया। इस अवसर पर उन्होंने विश्व हिन्दू परिषद (जिला-वेल्लोर) द्वारा आयोजित एक हिन्दू सम्मेलन को भी संबोधित किया। इस अवसर पर विश्व हिन्दू परिषद के स्थानीय पदाधिकारीगण एवं नगरवासियों ने पूज्या दीदी माँ जी का पाथेय प्राप्त किया।

वेल्लोर में हिन्दू सम्मेलन को संबोधित करते हुए। मंचस्थ हैं-श्री जगदीशन जी (संघ चालक-वेल्लोर), श्री भगवती सिधार तथा श्रीमती जयंती सुरेश (मातृशक्ति प्रमुख-विहिप, उत्तरी तमिलनाडु)।

भक्ति भाव में डूबा हुआ दक्षिण भारत सम्पूर्ण सनातन समाज की प्रेरणा है...

-दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा

रामेश्वरम् धाम से प्रारंभ हुए अपने दक्षिण भारत प्रवास में हजारों वर्ष प्राचीन अपनी सनातन परम्परा का अत्यन्त ही शुचितापूर्ण एवं सुन्दर दर्शन मुझे करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। भारत के अनेक राज्यों में एक हजार वर्ष पहले विधर्मियों के हमले हुए। हमारी आस्था के केन्द्रों, मंदिरों पर आघात किये गए। कितने अद्भुत शिल्प थे, कितनी अद्भुत कलाकृतियाँ थीं, जिन्हें देखकर पत्थर हृदय भी पिघल जाएँ परन्तु वो विधर्मी संभवतः पशुओं से भी ज्यादा नराधम रहे होंगे जिन्होंने हमारी उन सांस्कृतिक धरोहरों के ऊपर आघात करते रहे। देवस्थानों की संपत्तियाँ तो उन्होंने लूटी ही हैं लेकिन हमारी आस्था पर भी चोट की। अभी मैं श्री रंगनाथम् का दर्शन करके आ रही हूँ। मैं वहाँ के मंदिर को रंगबिरंगे स्तंभों और गुबंदों को देखकर भावविभोर थी, तभी उनके बीच एक सफेद स्तंभ पर दृष्टि गई। अचरज हुआ कि यह सफेद क्यों है? पूछने पर पता चला कि मलिक काफूर नाम का एक विधर्मी हमलावर मंदिर को लूटने के लिए बहुत बड़ी सेना लेकर यहाँ आया था। भक्तों ने देव प्रतिमा को छुपा लिया। वहाँ पर एक भक्त थी जो किसी बहाने से उस विधर्मी सेनापति को गोपुरम् के ऊपर ले गई और उसने वहाँ से उसको धक्का देकर स्वयं भी वहाँ से कूदकर आत्मबलिदान कर दिया। उसी बलिदानी स्त्री के सम्मान में उस स्तंभ को आज तक सफेद रखा गया है। एक अन्य देवस्थान का दर्शन मैंने किया जिसके मुख्य मंदिर के श्रीविग्रह को विधर्मियों के हमलों से बचाने के लिए दीवार खड़ी करके सुरक्षित रखा गया था। तीस वर्षों तक भक्तगण उसके स्थान पर एक अन्य शिवलिंग को पूजते रहे। बाद में पापियों ने वहाँ आकर उस शिवलिंग के ऊपर भी आघात किये। उसकी रक्षा करते हुए लगभग बारह हजार भक्तों ने अपना बलिदान दिया। तो यदि आप अपने पूर्वजों के बलिदानों की कहानियाँ सुनोगे तो आपका हृदय जो है बहुत प्रेरित होता है। सनातन संस्कृति पर लगातार आघात होते रहे हैं और आज भी हो रहे हैं। उसके प्रति हमें सजग होना, सचेत होना बहुत जरूरी है। हमें अपनी संतानों को अपने इतिहास से परिचित कराना बहुत जरूरी है। पूरा दक्षिण भक्ति भाव में डूबा हुआ है। ऐसे अद्भुत देवस्थान और उनमें इतनी पावन और सुंदर पूजा पद्धति, हजारों-हजारों वर्षों से पूजित प्रतिमाएँ अब केवल प्रतिमाएँ नहीं रहीं, वो तो साक्षात् भगवान और भगवती हैं। ये हमारे शक्ति केंद्र हैं। हम सब भारतीय बहुत भाग्यशाली हैं लेकिन हमको बहुत सजग होने की जरूरत है कि फिर से हमारी सनातन संस्कृति पर आघात का प्रयत्न न किया जा सके। दक्षिण भारत की यात्रा के समय हृदय में भक्ति भाव और प्रबलता से जागृत हो रहा है। अपने पूर्वजों की शक्ति, उनका बलिदान, उनका ईश्वर और धर्म के प्रति जो समर्पण है, राष्ट्र के प्रति जो समर्पण है, उनकी गाथाएँ सुन-सुनकर हृदय बहुत प्रेरित हो रहा है। समस्त भारतवासियों को अपने जाज्जवल्यमान संघर्षों की कहानियों के बारे में पता होना चाहिए। आज मैं भगवती के चरणों में बैठकर आप सबको बहुत-बहुत आशीर्वाद देती हूँ।

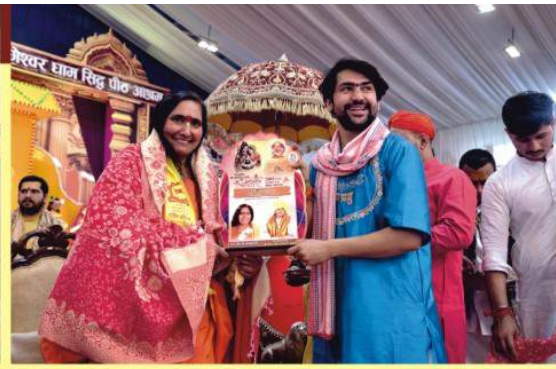

पूज्यपाद जगद्गुरु रामानंदाचार्य श्री रामभद्राचार्य जी महाराज के पावन सानिध्य में
श्री बागेश्वर धाम, छतरपुर के सामूहिक विवाह आयोजन में पूज्या दीदी माँ जी का शुभागमन

छतरपुर, मध्यप्रदेश

श्री बागेश्वर धाम में विगत 15 फरवरी को महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर 'सामूहिक विवाह सम्मेलन' के अन्तर्गत 305 कन्याओं का विवाह सन्तों के सानिध्य में सम्पन्न हुआ। विवाह सम्मेलन में बारात के स्वागत, दोनों पक्षों के भोजन से लेकर नवदंपतियों को उपहार सामग्री तक के सभी खर्च 'बागेश्वर धाम सेवा समिति' के द्वारा किये गए। सम्मेलन के लिए समिति के पास आवेदनों में कन्याओं का चयन गरीबी के आधार पर किया गया है। बागेश्वर धाम सिद्धपीठ आश्रम के पीठाधीश्वर पं.धीरेन्द्र शास्त्री इस आयोजन के प्रेरणास्रोत थे। इस अवसर पर पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी समारोह में सम्मिलित हुईं। आपने नवयुगलों को अपना शुभाशीष प्रदान करते हुए अपने आशीर्वचन प्रदान किये। इसके पूर्व खजुराहो विमानतल पहुँचने पर आपका स्वागत-वन्दन किया गया।

हिन्दू समाज का गौरव हैं श्री बागेश्वर सरकार

-दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा

सत्य सनातन धर्म की परम्परा के संवाहक प्रातः स्मरणीय, सायं वंदनीय जगद्गुरु भगवान के चरणों में नमन करते हुए मंचासीन समस्त संतों को प्रणाम करती हूँ। आज बागेश्वर धाम के इस पावन प्रांगण में तीन सौ पुत्रियों का विवाह सम्पन्न होने जा रहा है। मैं इन सभी नवयुगलों को अपना बहुत-बहुत आशीर्वाद प्रदान करती हूँ। आप सभी धर्म की छाया और संतों के सानिध्य में दाम्पत्य सूत्र में बंध रहे हैं, इसलिए आपका उत्तरदायित्व है कि आप धर्ममय संतानों के माता-पिता बनें, संस्कारों के प्रवाह को प्रवाहित करें और जो सनातन धर्म की मर्यादा है, उसका पालन करें। स्वयं जगद्गुरु भगवान आपको आशीर्वाद देने आए हैं, इससे बड़ा सौभाग्य तो किसी राजा महाराजा की पुत्री का भी नहीं हो सकता। मैं बागेश्वर धाम सरकार को बहुत-बहुत शुभकामनाएं बधाई देती हूँ, जिन्होंने पिता तुल्य, भ्राता तुल्य अपना कर्तव्य निभाया है। सनातन का संस्कार व्यक्ति को व्यक्ति नहीं रहने देता अपितु समष्टि बना देता है। हमारी व्यक्ति से मुक्ति हो और हम समष्टिगत चिंतन करें। हम सबके कल्याण की कामना तो करते हैं पर उस कल्याण के लिए कार्य भी करें। यह साक्षात् उदाहरण यहाँ हमें देखने को मिल रहा है। मैं समझती हूँ कि हम भारतीयों के संस्कारों में है पुत्रियाँ। जिस घर में बेटियाँ होती हैं, वहाँ देवता प्रसन्न होकर हर तरह की समृद्धि की वर्षा करते हैं।

अभी जब बागेश्वर धाम सरकार अपना पल्ला फैलाकर अपने गुरुदेव से आशीर्वाद ले रहे थे, तो मैं सोच रही थी कि जिन पर गुरुओं की सद्गुरुओं की कृपा हो जाती है, वह फिर किसी एक के नहीं रहते, बल्कि वे तो सबके हो जाते हैं। सबके कल्याण की कामना के साथ कार्य करते हैं। हमारे सनातनी गौरव के रूप में धीरेन्द्र शास्त्री जी ने सनातन की ध्वजा पकड़ी है। उनके साथ ही हम सबका भी संकल्प है कि भारत हिन्दू राष्ट्र बने। अपने भारत की गरिमा को, गौरव को, उसकी प्रतिष्ठा को अक्षुण्य बनाए रखने के लिए जिनके हाथ में पूजय जगद्गुरु रामानंदाचार्य जी भगवान ने धर्मध्वजा सौंपी है, हम सब उनके साथ हैं।

वात्सल्य प्रकाशन की प्रस्तुतियाँ...

पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी के पावन विचारों से युक्त साहित्य परमशक्ति पीठ के 'वात्सल्य प्रकाशन' द्वारा प्रकाशित किया जाता है, जो आपको जीवन की अनेक समस्याओं के सरल समाधान देता है। आप भी इन पुस्तकों को पढ़कर अपना जीवन सकारात्मक रूप में परिवर्तित कर सकते हैं।

वात्सल्य साहित्य

01. आत्मसुख की ओर
02. सद्गुरु - बन्धनों के मुक्तिदाता
03. योग - सफल जीवन का रहस्य
04. सार्थक जीवन के सूत्र
05. यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते
06. जीवन का परमानन्द
07. साधना के पथ पर
08. जागो भारत की नारी
09. सद्गुरु - जीवन की आवश्यकता
10. माँ - सृष्टि की धुरी
11. मुझे बचाओ माँ
12. परमशक्ति योग (हिन्दी)
13. परमशक्ति योग (अंग्रेजी)
14. यशोदा भाव - वात्सल्य ग्राम की मूल प्रेरणा
15. अनुभूति
16. पाथेय
17. व्यक्तित्व और विचार
18. मेरी स्मृतियों के भानु भैया
19. शुभाशीष
20. युगपुरुष की युगयात्रा
21. पिबत भागवतं रसमालयम्
22. नया सवेरा लाओ (काव्य संग्रह)
23. साधना के स्वर (भजन संग्रह)
24. भजन वर्षा (भजन संग्रह)
25. मेरी छोटी सी है नाव (भजन संग्रह)
26. वात्सल्य
27. श्रीमद्भगवद्गीता
28. निरामय प्राकृतिक चिकित्सा

पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भराजी के बाल्यकाल और श्रीरामजन्मभूमि संघर्ष की रोचक गाथा

साध्वी ऋतम्भरा और श्रीरामजन्मभूमि आंदोलन

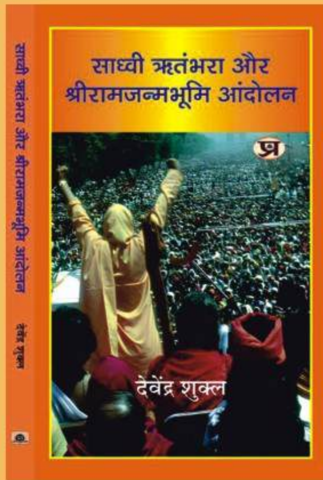

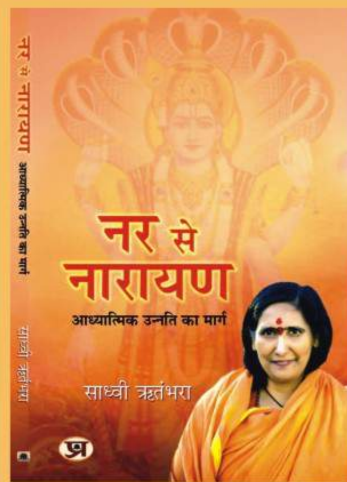

ये दोनों पुस्तकें www.prabhatbooks.com पर ऑनलाइन ऑर्डर करके घर बैठे मंगवाई जा सकती हैं

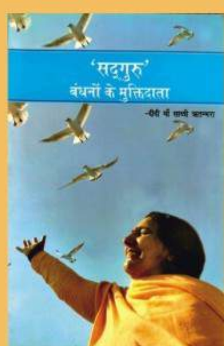

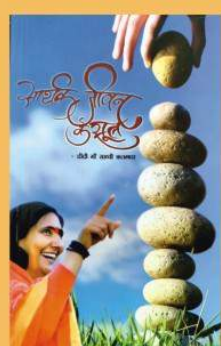

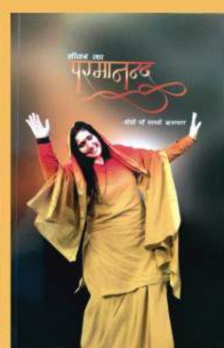

उपरोक्त साहित्य मंगवाने के लिए आप 'परमशक्ति पीठ' के निम्न पतों अथवा फोन नंबर्स पर सम्पर्क कर सकते हैं।

केन्द्रीय कार्यालय

परमशक्ति पीठ
लव-102, अग्रसेन आवास, 66 इन्द्रप्रस्थ विस्तार,
नई दिल्ली-110092
सम्पर्क फोन नं.-01122238751, 9958885858
ईमेल-info@vatsalyagram.org
वेबसाइट-www.vatsalyagram.org

शाखा कार्यालय

वात्सल्य ग्राम
मथुरा-वृन्दावन मार्ग,
पोस्ट-प्रेमनगर
वृन्दावन, जिला-मथुरा (उत्तरप्रदेश) पिन-281003
सम्पर्क फोन नंबर-9412777151

परमशक्ति पीठ के सेवा प्रकल्प

वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन

के विभिन्न प्रकल्पों हेतु आपके आर्थिक सहयोग का स्वागत है

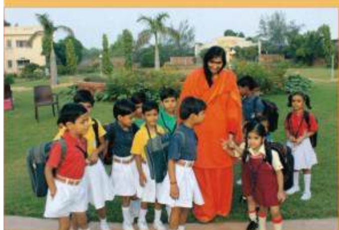

परमशक्ति पीठ में आपका सहयोग

आजीवन सहयोगी	1,00,000/-
संस्थापक सहयोगी	5,00,000/-
कार्पोरेट सहयोगी	11,00,000/-

वत्सल निधि में आपका सहयोग

शिक्षा निधि (वार्षिक)	6000/-
वत्सल निधि (एक सुविधा) वार्षिक	24,000/-
वत्सल निधि (शिक्षा, स्वास्थ्य, भोजन, होस्टल, अन्य) वार्षिक	1,20,000/-
बच्चों का एक समय का भोजन	21,000/-

वैशिष्ट्यम् स्कूल (दिव्यांग बच्चों हेतु) में आपका सहयोग

दिव्यांग बच्चों की समुचित देखभाल हेतु (वार्षिक)	1,50,000/-

चिकित्सा सेवाओं में आपका सहयोग

वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन के प्रेमवती गुप्ता नेत्र चिकित्सालय में आयोजित होने वाले निःशुल्क मोतियाबिन्द ऑपरेशन शिविरों हेतु (एक रोगी के ऑपरेशन हेतु)	3000/-
ग्रामीण क्षेत्रों में आयोजित होने वाले निःशुल्क स्वास्थ्य शिविरों हेतु (प्रति शिविर)	51,000/-

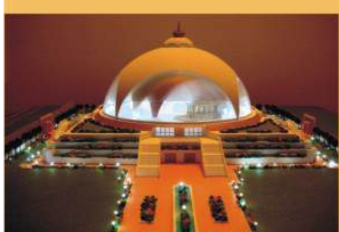

श्री सर्वमंगला पीठम् में आपका सहयोग

संस्थापक सहयोगी	5,00,000/-
एक शिला सहयोगी	1100/-

गौ सेवा में आपका सहयोग

वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन की 'कामधेनु गौगृह गौशाला' हेतु

प्रति गौमाता सहयोग (मासिक)	3100/-
प्रति गौमाता सहयोग (वार्षिक)	36,000/-
गौवंश हेतु भूसा सहयोग (दैनिक)	11,000/-
गौवंश हेतु हरा चारा सहयोग (दैनिक)	5100/-
गौ दान राशि	50,000/-

Param Shakti Peeth

Vatsalya Gram, Vrundavan

Your Donetion is welcome for our various service projects

Your Donation for Param Shakti Peeth

Life Member	1,00,000/-
Founder Member	5,00,000/-
Corporate Member	11,00,000/-

Your Donation for Vatsal Nidhi

Shiksha Nidhi (Annual)	6000/-
Vatsal Nidhi (For one facility) Annual	24,000/-
Vatsal Nidhi (Education, Health, Meal, Hostel etc.) Annual	1,20,000/-
One time meal for children	21,000/-

Your Donation for Vaishishtyam school

For proper care of disabled children (Annual)	1,50,000/-

Your Donation for Medical Services

•For cataract operation camps to be organized at Premvati Gupta Eye Hospital, Vatsalya Village] Vrindavan (For operation of one pataint)	3000/-
•For free health camps to be organized in rural areas	51,000/-

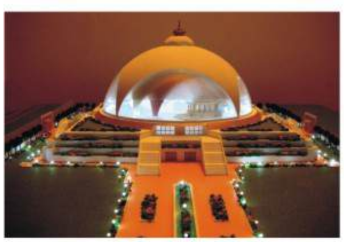

Your Donation for Shri Sarvmangla Peetham

Founder Member	5,00,000/-
One Brick donation	1100/-

Your Donation for Cow Shed

For Kamdhenu Gaugruh Gaushala of Vatsalya Gram

For One cow (Monthly)	3100/-
For One cow (Yearly)	36,000/-
Straw for cattle (Daily)	11,000/-
Green fodder cooperation for cattle (Daily)	5100/-
Cow donation fund	50,000/-

वात्सल्य ग्राम के साथ जुड़ने के लिए धन्यवाद

परमशक्ति पीठ के सेवाकार्यों में आप अपना सहयोग इस प्रकार दे सकते हैं :

बैंक खातों में सीधे जमा करने के लिए जानकारियाँ

बैंक का नाम : पंजाब नेशनल बैंक
खाता क्रमांक : 1518000101014134
आई.एफ.एस.सी. कोड : PUNB0151800

बैंक का नाम : स्टेट बैंक ऑफ इन्डिया
खाता क्रमांक : 10137296689
आई.एफ.एस.सी.कोड : SBIN0007085

दान के लिए ऑनलाइन लिंक :
https://www.vatsalyagram.org/donate

ऑनलाइन दान के लिए कृपया इन क्यू.आर.कोड्स को स्केन करें

चेक अथवा डिमांड ड्राफ्ट द्वारा भी दान राशि परमशक्ति पीठ कार्यालय में भेजी जा सकती है।

प्रधान कार्यालय का पता :

परमशक्ति पीठ

लव–102, अग्रसेन आवास,
66, इन्द्रप्रस्थ विस्तार, पटपड़गंज, नई दिल्ली –110092
सम्पर्क सूत्र : 011-22238751, 9999971714, 9999971716
ईमेल : donorcare@vatsalyagram.org **वेबसाइट :** www.vatsalyagram.org

आपका सहयोग आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है।

योगदान प्रपत्र

जी हाँ, मैं वात्सल्य ग्राम के सेवा प्रकल्पों में अपना योगदान देना चाहता हूँ / चाहती हूँ। मेरा व्यक्तिगत विवरण इस प्रकार है।

श्री/श्रीमती/कुमारी ____________________

व्यवसाय ____________

पता ____________________

____________ पिनकोड ________

सम्पर्क फोन नंबर ____________

ईमेल आई.डी. ____________________

दान राशि (अंकों में) ________ (शब्दों में) ____________

परमानेंट अकाउंट नंबर (PAN) ____________

संकल्प - पर्यावरण संरक्षण का

मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री एवं वर्तमान केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान 19 फरवरी 2021 को नर्मदा जयंती के अवसर पर अमरकंटक में नर्मदा तट पर रूद्राक्ष का पौधा लगाकर संकल्प लिया था कि वे प्रतिदिन एक पौधा अवश्य लगाएंगे। इस संकल्प को निभाते हुए वे अब तक 6,000 से अधिक पौधे लगा चुके हैं। विगत 19 फरवरी 2026 को इस संकल्प के 5 वर्ष पूर्ण होने पर नई दिल्ली के भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान परिसर में विशेष कार्यक्रम आयोजित हुआ, जहाँ उन्होंने पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी के मुख्य आतिथ्य में पौधारोपण किया। इस अवसर पर ए.पी.शिन्दे सभागार में एक आयोजन को संबोधित करते हुए दीदी माँ जी ने शिवराजसिंह जी के संकल्प की सराहना करते हुए कहा कि -'चरैवति का मंत्र सीखना है तो शिवराजसिंह जी से सीखें क्योंकि वे पिछले पाँच वर्षों से निरन्तर एक पौधा प्रतिदिन रोप रहे हैं। उनका यह संकल्प वास्तव में एक जनआंदोलन बनना चाहिए ताकि हमारी धरती के पर्यावरण की रक्षा हो सके।'

Donation Form

Yes, I want to contribute for Vatsalya Gram. My personal details are

Mr./Mrs/Ms :...

Occupation :...

Address :...

....Pin Code.........................

Phone No. :............................ Mobile No. :...............................

email :..

Donation Amount (In digits) :......................(In words)ण्ण्ण्.........................

....Permanent A/c No..

Thanks for join hands with Vatsalya Gram

You can dontate your donation directly in following banks :

Bank name : Pujab National Bank	Bank name : State Bank Of India
A/c. No. : 1518000101014134	A/c. No. : 10137296689
IFSC Code : PUNB0151800	IFSC Code : SBIN0007085

Link for online donation : https://www.vatsalyagram.org/donate

Paytm Mobile Number of Donation : 88268 88001

यज्ञानुष्ठान की वैज्ञानिकता

वैदिक परंपरा में यज्ञों का वर्षा (वृष्टि या पर्जन्य) से बहुत गहरा और प्रत्यक्ष संबंध माना जाता है। यह संबंध मुख्य रूप से आध्यात्मिक, कर्मकांडीय और पारिस्थितिक चक्र पर आधारित है। भगवद्गीता के अध्याय 3, श्लोक 14 में श्रीकृष्ण कहते हैं :

अन्नाद् भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भवः।

यज्ञाद् भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः।।

अर्थात् प्राणी अन्न से उत्पन्न होते हैं। अन्न वर्षा (पर्जन्य) से उत्पन्न होता है। वर्षा यज्ञ से होती है। यज्ञ कर्म (वैदिक कर्मकांड या कर्तव्य) से उत्पन्न होता है।

यज्ञ इस चक्र का केंद्र है। यदि यज्ञ (विशेषकर सोमयाग, अग्निहोत्र आदि) ठीक से नहीं होते, तो वर्षा अनियमित हो जाती है, सूखा पड़ता है, और अन्न की कमी हो जाती है।२. वैदिक दृष्टि में यज्ञ कैसे वर्षा लाता है?वैदिक ऋषियों के अनुसार यज्ञ केवल धुआँ या अग्नि नहीं, बल्कि एक ऊर्जा-प्रक्रिया है जो देवताओं को तृप्त करती है।

यज्ञ में आहुति (घी, सोम, जड़ी-बूटियाँ आदि) देवताओं तक पहुँचती है। इंद्र (वर्षा और बादलों के देवता) को सोमरस बहुत प्रिय है। सोमयाग से इंद्र प्रसन्न होकर वज्र से बादलों को फोड़ते हैं और वर्षा करते हैं (ऋग्वेद में इंद्र-वृत्र संग्राम इसी का प्रतीक है)।पर्जन्य (वर्षा देवता), वरुण (जल देवता) और अग्नि भी यज्ञ से संतुष्ट होकर कार्य करते हैं।

वैदिक साहित्य में अग्नि को वर्षा का कारण बताया गया है। अग्नि में दी गई आहुति से धूम्र या वाष्प, वाष्प से बादल और बादल से वर्षा होती है।ऋग्वेद (६.४६.३) के अनुसार घृतं पवस्व धारया अस्मभ्यं वृष्टिमा पव। (घी की धारा बहाकर हमें वर्षा दो।) अग्नि की गर्मी और यज्ञीय धूम्र वातावरण को शुद्ध करता है, बादलों के निर्माण में सहायक होता है।

विभिन्न यज्ञ और वर्षा

सोमयाग/अग्निष्टोम : मुख्य रूप से इंद्र को सोम अर्पित कर वर्षा प्राप्ति के लिए।

पर्जन्य यज्ञ / वृष्टि यज्ञ : विशेष रूप से सूखे में वर्षा के लिए किया जाता है। वरुण/इंद्र मंत्रों का जाप, हवन, और कभी-कभी जल में डुबकी आदि।

अग्निहोत्र : दैनिक छोटा यज्ञ, जो नियमित वर्षा और पर्यावरण संतुलन बनाए रखता है। राजसूय, अश्वमेध जैसे बड़े यज्ञ भी अप्रत्यक्ष रूप से वर्षा और समृद्धि लाते थे।

वैदिक दृष्टि में यह मुख्यतः देवताओं की कृपा और प्रकृति के संतुलन पर आधारित है, न कि केवल भौतिक कारणों पर।

वैदिक संस्कृति में यज्ञ केवल पूजा नहीं, बल्कि प्रकृति के साथ सामंजस्य का माध्यम है। इसीलिए प्राचीन भारत में राजा और ऋषि विराट यज्ञ करवाते थे ताकि देश में अच्छी वर्षा हो। वृष्टि यज्ञ (या पर्जन्य यज्ञ, वर्षा यज्ञ) वैदिक परंपरा में विशेष रूप से वर्षा की प्राप्ति, सूखे से राहत और अच्छी बारिश के लिए किया जाने वाला यज्ञ है। यह देवयज्ञ की श्रेणी में आता है,

यज्ञानुष्ठान प्रायः खुले स्थानों, नदी, तालाब अथवा कुण्डों के पास यज्ञशाला में सम्पन्न किये जाते हैं। इसमें मुख्य यज्ञाचार्य यज्ञ के मुख्य यजमान से संकल्प करवाते हैं। हवन सामग्री के रूप में पीपल, पलाश, आम, बबूल आदि (वर्षा बढ़ाने वाली) समिधाएँ, गौघृत, जड़ी-बूटियाँ (नीम, तुलसी, चंदन, कपूर, लौंग, इलायची आदि), चावल, जौ, तिल, शहद, सोमलता, आमलकी, आम्र आदि फल, जल कलश, दूर्वा, फूल होते हैं। अग्नि स्थापना के साथ ही यज्ञानुष्ठान प्रारंभ होता है जिसमें वैदिक मंत्रों का सस्वर पाठ करते हुए विभिन्न देवताओं के लिए आहुतियाँ प्रदान की जाती हैं। सामान्यतः इनकी संख्या 108, 1008 अथवा हजारों में भी हो सकती है। यज्ञानुष्ठान का वैज्ञानिक पक्ष है कि इसके सम्पन्न होने पर घी और जड़ी-बूटियों का धुआँ वातावरण को शुद्ध करता है, वर्षा के लिए बादलों के निर्माण में सहायक होता है।

अनुसंधानों से सिद्ध हुआ है कि यज्ञ की हवन सामग्री (औषधीय जड़ी-बूटियाँ, गोघृत, मंत्रोच्चार के साथ) का धुआँ वातावरण को शुद्ध करता है। यज्ञ के धूम्र से नाइट्रोजन डाइऑक्साइड में 23-47% और सल्फर डाइऑक्साइड में 33-86% तथा कुछ मामलों में लगभग 100% तक कमी दर्ज की गई। यज्ञ धूम्र कार्बन डायऑक्साइड को फॉर्मेल्डिहाइड में बदलकर एंटीसेप्टिक प्रभाव पैदा करता है।

हवन धूम्र से बैक्टीरिया, फंगी और पाथोजेंस में 55-93% तक कमी आती है। इनडोर प्रयोगों में चौबीस घंटे बाद भी प्रभाव बना रहता है। यज्ञ की भस्म पानी में घुलनशील ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ाती है, पी.एच. को नियंत्रित करते हुए हानिकारक बैक्टीरिया कम करती है। यज्ञ के अन्य लाभों के रूप में वातावरण की दुर्गंध दूर होती है। वातावरण में ऑक्सीजन और कॉर्बन डायऑक्साइड का संतुलन बना रहता है। यज्ञ भस्म में पोटेशियम, फॉस्फोरस, कैल्शियम आदि खनिज होते हैं जो मिट्टी को उपजाऊ बनाते हैं।

युवाओं के लिए

रोजगार मार्गदर्शन

माइक्रोबायोलॉजी

माइक्रोबायोलॉजी के अंतर्गत सूक्ष्म जीवों जैसे कि प्रोटोजोआ, एलगी बैक्टीरिया और वाइरस इत्यादि का गहन अध्ययन किया जाता है। इस विषय के विशेषज्ञ इन जीवाणुओं के जीव जगत पर अच्छे व बुरे प्रभावों को जानने की कोशिश करते हैं। जीन थैरेपी तकनीक के जरिए इंसानों में होने वाली गंभीर अनुवांशिक गड़बड़ियों के बारे में भी पता लगाते हैं। एक तरह से मैकरोबस अर्थात् अति सूक्ष्म जीव पर्यावरण सुरक्षा के लिए भी जिम्मेदार हैं। ये फसलों के लिए मिट्टी को उर्वरक बनाने का काम भी करते हैं। संक्रामक बीमारियों की रोकथाम के लिए भी इनके अध्ययन की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है।

माइक्रोबायोलॉजी :

सूक्ष्मजीव वे जीव हैं जिन्हें कोई भी इंसान नग्न आँखों से नहीं देख सकते हैं। जैसे कि बैक्टीरिया, वायरस और फंगी। असल में सूक्ष्म जीव, जीव विज्ञान का वह अंग है जिसमें उनके व्यवहार, संरचना, इस्तेमाल और अस्तित्व का अध्ययन किया जाता है। सूक्ष्म जीव विज्ञान के विशेषज्ञ व्यक्ति को 'माइक्रोबायोलॉजिस्ट' कहा जाता है, जो कि प्रोफेशनल या साइंटिस्ट के रूप में कार्य करता है।

योग्यता :

जो कोई भी विद्यार्थी इस क्षेत्र में कदम रखना चाहता है, तो उसका स्कूली बैकग्राउंड बायोलॉजी का होना अनिवार्य है। बारहवीं कक्षा की परीक्षा फिजिक्स, केमिस्ट्री और बायोलॉजी से पास करने के बाद आप किसी सरकारी या निजी संस्थान से माइक्रोबायोलॉजी या लाइफ साइंस जैसे विषयों में प्रवेश ले सकते हैं। बहुत से विधार्थी माइक्रोबायोलॉजी में मास्टर्स डिग्री के बाद रिसर्च में कदम बढ़ाते हैं। इस क्षेत्र में आपके लिए बी.एससी., एम.एससी., बी.टेक. या एम.एस. स्तर के कोर्स भी उपलब्ध हैं।

माइक्रोबायोलॉजी से जुड़े कुछ प्रमुख कोर्स :

अगर आप माइक्रोबायोलॉजी क्षेत्र में अपना करियर शुरू करना चाहते है तो आप अलग-अलग स्तर के डिग्री, डिप्लोमा कोर्स कर सकते हैं।

बैचलर कोर्स :

बैचलर ऑफ साइंस इन फूड टेक्नोलॉजी, बैचलर ऑफ साइंस इन क्लीनिकल माइक्रोबायोलॉजी, बैचलर ऑफ साइंस इन माइक्रोबायोलॉजी, बैचलर ऑफ साइंस इन अप्लाइड माइक्रोबायोलॉजी।

मास्टर्स डिग्री :

मास्टर्स ऑफ साइंस इन माइक्रोबायोलॉजी, मास्टर्स ऑफ साइंस इन अप्लाइड माइक्रोबायोलॉजी, मास्टर्स ऑफ साइंस इन मेडिकल माइक्रोबायोलॉजी, बैचलर ऑफ साइंस इन मैकरोबियाल जेनेटिक्स एंड बायोइंफॉर्मेटिक्स।

विशेष कोर्स :

माइक्रोबियल, वाटर माइक्रोबायोलॉजी, वेटरिनरी माइक्रोबायोलॉजी, जेनरेशन माइक्रोबायोलॉजी, एनवायरमेन्टल माइक्रोबायोलॉजी, नैनो माइक्रोबायोलॉजी, सेलुलर माइक्रोबायोलॉजी, एग्रीकल्चर माइक्रोबायोलॉजी, फार्मास्युटिकल माइक्रोबायोलॉजी।

माइक्रोबायोलॉजिस्ट का कार्यक्षेत्र :

इस पद पर कार्य करने वाले विशेषज्ञ को शरीर में होने वाले संक्रमण और उनकी रोकथाम के उपायों की तलाश, पानी एवं खाद्य पदार्थों की आपूर्ति के दौरान उसमें फैलने वाली बीमारियों का अध्ययन करने के साथ ही उन पर समय रहते नियंत्रण करने के उपायों की खोज भी करते हैं। इसके साथ ही एग्रीकल्चर माइक्रो बायोलॉजिस्ट फसलों की सेहत सुधारने, उन्हें हानिकारक कीटों से बचाने, मिट्टी की गुणवत्ता देखकर उसकी उत्पादकता बढ़ाने जैसे कार्य भी करते हैं। डेयरी उत्पादों की गुणवत्ता बढ़ाने की जिम्मेदारी भी इन्हीं के कंधों पर होती है।

वेतन :

इस क्षेत्र मे करियर बनाने वालों के लिए देश और विदेशों में जॉब की भरपूर संभावनए मौजूद हैं, जिसमें आपको अच्छा खासा वेतन मिलता है। खासकर निजी और बहुराष्ट्रीय क्षेत्र में आपको अच्छा वेतन मिल सकता है।

(ultimateguider.in से साभार)

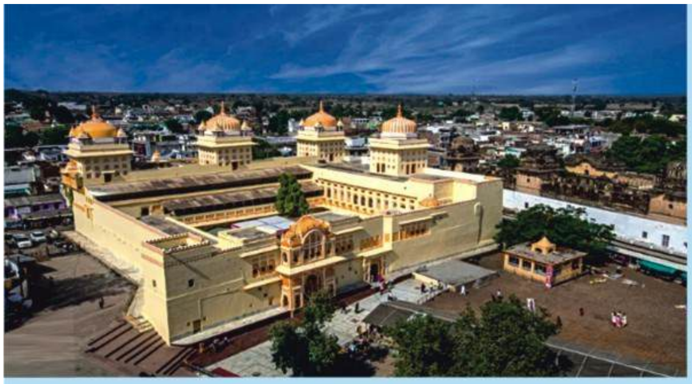

श्री रामराजा मंदिर

ओरछा (मध्यप्रदेश)

15वीं शताब्दी में राजा रुद्रप्रताप सिंह जूदेव बुन्देला के द्वारा यह मंदिर प्रभु श्रीराम के लिए बनवाया गया था, जिनके विग्रह को मधुकर शाह बुन्देला के शासनकाल (1554-92) के दौरान उनकी रानी गनेश कुँवर राजे अयोध्या से लाई थीं। चतुर्भुज मंदिर बनने से पहले रानी पुख्य नक्षत्र में अयोध्या से पैदल चलकर बालस्वरूप भगवान राम (रामलला) को ओरछा लाईं परंतु रात्रि हो जाने के कारण भगवान के विग्रह को कुछ समय के लिए महल के भोजन कक्ष में स्थापित किया गया। परन्तु बाद में कोई भी मूर्ति को उसके स्थान से हिला नहीं पाया। इसे ईश्वर का चमत्कार मानते हुए महल को ही मंदिर का रूप दे दिया गया और इसका नाम रखा गया 'रामराजा मंदिर।' आज इस महल के चारों ओर शहर बसा है और रामनवमी पर यहाँ हजारों श्रद्धालु जुटते हैं। इस स्थान पर भगवान श्रीराम को राजा भी माना जाता है। एक राजा के समान ही सम्मानस्वरूप उन्हें प्रतिदिन सशस्त्र पुलिस बल द्वारा 'गार्ड ऑफ ऑनर' दिया जाता है। यह मंदिर जिला निवाड़ी (मध्यप्रदेश) के ओरछा नगर में स्थित है। यहाँ से झाँसी की दूरी 15 किलोमीटर है।

लघुकथा

धरम करम

- रमेश रंजन त्रिपाठी

गरीबों के हमदर्द कहलाने वाले रामासरे वकील साहब का सम्मान रामकथा मंडल द्वारा किया जा रहा था। उन्होंने एक साधारण आय वाले निरपराध कथावाचक को कानून के फंदे में उलझने से नाममात्र की फीस लेकर बचाया था। उस समारोह में पंडित, पुजारी और कथावाचकों की उपस्थिति अधिक थी। सभी रामासरे जी के सेवाभाव की प्रशंसा कर रहे थे। अंत में रामासरे जी बोलने के लिए खड़े हुए तो जोरदार तालियाँ बजीं। वकील साहब ने बड़ी रोचक बात कही- 'मैंने आप लोगों से श्रीरामचरितमानस सुनकर ही जीवन का लक्ष्य निर्धारित किया और सफलता पाई।' सभी के चेहरे पर विस्मय के भाव देखकर रामासरे जी विस्तार से बताने लगे-'मेरा परिवार बहुत गरीब था। किसी तरह बच्चों की ट्यूशन करके मैंने बी.ए. पास कर लिया था। आगे की पढ़ाई की गुंजाइश नजर नहीं आ रही थी। तब सत्संग की महिमा काम आई। एक पंडित जी से मैंने तुलसी बाबा की चौपाई सुनी थी, 'तिमि सुख संपत बिनहिं बोलाएँ, धरमसील पहिं जाहिं सुभाएँ', अर्थात् धर्म का पालन करने पर सुख और संपत्ति स्वाभाविक रूप से प्राप्त हो जाती हैं। उस उम्र में मेरा धर्म था, पढ़ाई और प्रयास करना। अपने मामाजी के साथ मेरी खूब पटती थी। उन्होंने कहा कि तुम दिन में काम करो और पढ़ाई रात में। रात को एल.एल.बी. की क्लास लगती थीं। मामाजी ने सलाह दी कि किसी तरह कानून की परीक्षा पास करो और वकालत करने लगो। मैंने यही किया। दिन में काम करने के लिए मामाजी की सलाह पर मैंने न्यायालय परिसर में लोगों की अर्जी लिखने की शुरुआत की। क्योंकि कुछ पैसे कमाने के साथ मैं वकील बनने तक कोर्ट के माहौल से भलीभाँति परिचित होना चाहता था। जल्दी ही मुझे टाइप की हुई अर्जी का महत्व समझ में आ गया। मामाजी ने भी मेरी बात का समर्थन किया। अब सीखनी थी टाइपिंग। मामाजी ने मदद की। मैंने खूब मेहनत की और तीन महीने में टाइपिंग सीख ली।'

वकील साहब ने रुककर देखा, सभी बड़े ध्यान से सुन रहे थे। वे उत्साहित हो आगे का घटनाक्रम बताने लगे- 'मामाजी ने मुझे कर्ज स्वरूप टाइपिंग मशीन दिलाई। मैं दिन में कोर्ट जाता, लोगों के कागज टाइप कर कुछ कमाई कर लेता। रात में लॉ कॉलेज जाता। कोर्ट जाने के फायदे यह हुए कि मैं कोर्ट के वातावरण, कार्यवाही, जज, वकीलों से परिचित हो गया, मेरी टाइपिंग की स्पीड और शुद्धता बहुत अच्छी हो गई, ड्राफ्टिंग सुधर गई। किस्मत ने साथ दिया। कोर्ट में क्लर्क के एक पद पर भर्ती निकली। मैंने भी आवेदन कर दिया। टाइपिंग में मेरे मुकाबले कोई न ठहर सका। मुझे नौकरी मिल गई। मैंने नौकरी करते हुए एल.एल.बी. की परीक्षा पास कर ली। मामाजी का कर्ज उतार दिया।'

रामासरे जी रुके, सबकी प्रतिक्रिया देखी, फिर मुस्कुराए -'आप सोच रहे होंगे कि मैं तो नौकरी नहीं वकालत कर रहा हूँ। ऐसा इसलिए कि मुझे बहुत शानदार जज साहब के साथ काम करने का अवसर मिला। उन्होंने समझाया कि नौकरी की अपेक्षा वकालत करते हुए मुझे जरूरतमंदों की सहायता करने के अवसर ज्यादा मिल सकते हैं। नतीजा आपके सामने है। नौकरी छोड़कर मैं वकील बन गया। रामायण के मंत्रों ने मेरे भाल के कुअंक मिटा दिए। मेरे जीवन की घटनाओं ने धर्म और कर्म अर्थात् सच्चाई, लगन और मेहनत की श्रेष्ठता सिद्ध कर दी थी। अपने धर्म के पालन से मुझे सफलता स्वाभाविक रूप से मिली।'

धर्मग्रंथों की शिक्षा के यथार्थ और वास्तविक पक्ष उजागर हो रहे थे। तालियाँ गूँज रहीं थी।

श्रीमद् भागवत कथा रसामृत से तृप्त हुई बीकानेर की भूमि

बीकानेर, राजस्थान

विगत 22 से 28 मार्च तक राजस्थान की ऐतिहासिक नगरी बीकानेर में श्रीमद् भागवत कथा महोत्सव का आयोजन सम्पन्न हुआ। पद्‌म भूषण विभूषिता वात्सल्यमूर्ति पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी ने व्यासपीठ पर विराजमान होकर सात दिनों तक नगरवासियों को श्रीमद् भागवत कथा रसामृत का अमृत पान कराया।

श्रीमद् भागवत कथा महोत्सव के सपत्निक एवं सपरिवार यजमान रहे–श्री सुनील कुमार सोनी (प्रथम दिवस)। श्री सुरेन्द्र राजपुरोहित, श्री अनिल सोनी, श्री मानिक चौधरी (द्वितीय दिवस)। श्री जुगलकिशोर जी, श्री झँवरलाल टोंक, (तृतीय दिवस)। श्री नारायण गेहलोत, श्री सुशील चाण्डक, श्री बलदेव मूंदड़ा, श्री महेश दम्मानी, श्री के.के.सुथार, श्री दीपक देरासरी, श्री हेमन्त देरासरी तथा श्री सुशील यादव (चतुर्थ दिवस)। श्री मनोज बजाज, श्री श्वेत गोस्वामी, श्री गजेन्द्रसिंह राठौर, श्री शैलेष गुप्ता, श्री सूर्यप्रकाश शर्मा, श्री मांगीलाल गेहलोत एवं श्री नत्थूलाल देरासरी (पंचम दिवस)। श्री कैलाश छगांडी, श्री सुनील जोशी, डॉ.एस.पी. जोशी, श्री राजेन्द्रसिंह शेखावत, श्री सुशील बाईसा, श्री जतिनभान सिंह, श्री दिव्यभान सिंह, श्री घनश्याम जाजू, श्री राकेश जाजू, श्री दशरथसिंह शेखावत एवं श्री आकाश टाँक (षष्ठम् दिवस)। श्री लक्ष्मण सथार, श्री मदनसिंह जी, श्री प्रेमसिंह जी, श्री दीपक पवाँर, श्री मनीष पवाँर, श्रीमती मंजूसिंह एवं सहयोगी, श्री गंगासिंह जी, श्री सुनील वर्मा, श्रीमती सपना तिवारी एवं सहयोगी (सप्तम् दिवस)।

सनातन धर्म रक्षा समिति के आयोजकत्व में स्थानीय पॉलिटेक्निक कॉलेज ग्राउंड में श्रीमद् भागवत कथा महोत्सव तथा 51 कुंडीय जंगलेश्वर विश्व शांति महायज्ञ सम्पन्न हुआ। आयोजन की पूर्वसंध्या पर नाल विमानतल, बीकानेर पहुँचने पर पूज्या दीदी माँ की भव्य अगवानी आयोजन समिति द्वारा की गई।

इसके पूर्व 21 फरवरी को एक विराट कलश यात्रा आयोजित की गई। पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी एवं निर्वाणपीठाधीश्वर एवं राजगुरु बीकानेर महामंडलेश्वर पूज्य स्वामी श्री विशोकानन्द भारती जी महाराज के पावन सानिध्य में यह कलश यात्रा श्री लक्ष्मीनाथ मंदिर से प्रारंभ होकर नगर के मुख्य मार्गों से गुजरी, जहाँ बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने पुष्पवर्षा कर इसका स्वागत किया। बड़ी संख्या में मातृशक्ति ने अपने शीश पर कलशों को धारण कर इस यात्रा में भाग लिया।

कथा महोत्सव 22 फरवरी को दोपहर 1 बजे प्रारंभ हुआ। इस अवसर पर पूज्या दीदी माँ जी एवं पूज्यपाद निर्वाणपीठाधीश्वर महामंडलेश्वर स्वामी श्री विशोकानंद भारती जी महाराज के पावन सानिध्य में श्री जगन्नाथ मंदिर के मुख्य पुजारी श्री भवानी देवापाठी, मुख्य यजमान श्री सुनील कुमार सोनी, श्रीमती माधुरी सोनी, सनातन धर्म रक्षा समिति के मुख्य संरक्षक श्री सुरेन्द्र राजपुरोहित, अध्यक्ष श्री अनिल सोनी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के बीकानेर विभाग प्रचारक श्री विनायक कुमार, विभाग संचालक श्री टेकचंद भरेडिया एवं हिन्दू जागरण मंच के श्री शैलेन्द्र गुप्ता ने दीप प्रज्ज्वलन में भाग लेकर आयोजन का शुभारंभ किया।

इस अवसर पर स्वामी श्री विशोकानंद भारती जी महाराज ने कहा कि –'विश्व में फैली अशांति को शांत करने की हिम्मत केवल सनातन धर्म में ही है। सनातन धर्म में ही वसुधैव कुटुंबकम् की सीख दी गई है।' कथा में प्रमुख रूप से श्री प्रहलाद सिंह मार्शल, श्री भुवनेश नागल, श्री राजेन्द्र सिंह शेखावत, श्री कन्हैयालाल राठी, श्री सुशील कुमार यादव, श्री गजेन्द्र सिंह राठौड़, श्री गोपाल भादाणी, श्री शैलेष गुप्ता, श्री कैलाश भार्गव, श्री सुनील कश्यप, श्रीविमल बिनावरा, श्रीमती उषा गेहलोत, श्रीमती जयश्री, श्रीमती पिंकी शर्मा तथा श्रीमती मंजू यादव सहित करीब सौ कार्यकर्ताओं ने पांडाल की व्यवस्थाएँ संभालीं।

कथ्य के तथ्य को समझकर सत्य के द्वार तक पहुँचें तभी कथा सार्थक होगी

–दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा

हम सब भाग्यशाली हैं जो भगवान की कथा में रमण कर रहे हैं। कल हमने देखा कि वृन्दावन किस तरह हमारी भक्ति को तरुण कर देता है। तीर्थों में रमण और संतों की वाणी से हमारे हृदय की भक्ति तरुण हो जाती है। लेकिन भक्ति तरुण होने पर भी ज्ञान और वैराग्य वृद्ध दिखाई देने लगें, तो ये कब होता है? जब ज्ञान के नाम पर हम शब्दों के पोटले इकट्ठे कर लेते हैं और वैराग्य के नाम पर दंभ को पालते हैं, तब ज्ञान और वैराग्य निष्प्राण हो जाता है। हमारी भक्ति तब तक सम्पन्न नहीं होती, जब तक हम कथ्य के भीतर के तथ्य के माध्यम से सत्य के द्वार तक नहीं पहुँच जाते। इसीलिए कथा के तथ्य को समझना जरूरी है। जगत की नश्वरता का बोध जीवन के उत्तरार्ध तक तो होने लग ही जाता है।

ध्यान रखना कि जो भी अपने पास है उस पर हमारा अधिकार नहीं है। हम दावा नहीं कर सकते कि जो हमें मिला है वो सदा हमारे साथ रहेगा। धीरे से जैसे बचपन जवानी में बदला, जवानी बुढ़ापे में बदली और अब बुढ़ापा भी परमानेंट नहीं है। एक दिन वो भी मृत्यु की गली में धक्का देकर छुटकारा पा जाता है। जो दृश्यमान जगत है वो काल कवलित है, वो काल के मुख में है, वो जन्म के साथ ही मृत्यु का शिकार है। जैसे-जैसे हम चारों तरफ अपने शरीर की दशा को देखते हैं, जब हम वस्तु, पदार्थ, व्यक्ति, परिस्थिति, हालात, अवस्थाएँ बदलते हुए देखते हैं तब धीरे-धीरे समझ आता है, जगत की नश्वरता का बोध होता है। तो करना क्या चाहिए? भाग जाएंगे तो बात बन जाएगी? पलायन करेंगे तो बात बनेगी नहीं। पलायन समाधान नहीं है। समझ समाधान है। नश्वर पदार्थों, व्यक्तियों के आश्रय में हम परम सुख की कामना करते हैं, वास्तव में वो तो मात्र मृग मरीचिका है। कभी धन-सम्पदा में, कभी वस्तुओं, कभी पद-प्रतिष्ठाओं में तो कभी किसी व्यक्ति में हम अपने सुख को ढूंढते हैं। दूर से देखने पर ये सुख हमें आकर्षित करते हैं लेकिन जब हम उन्हें प्राप्त कर लेते हैं तो फिर वही सारे सुख, दुःखों का रूप धारण करके हमारे सामने खड़े हो जाते हैं।

इसलिए सुख के लिए प्रयत्न करने वाला दुःखों के पहाड़ खड़े करता है, ये किसी दूसरे से पूछने या कहने की बात नहीं है। हम अपनी जिंदगी की कहानी को, अपने जीवन की यात्रा को जरा भी निष्पक्ष होकर देखेंगे तो यही दिखाई देता है कि जो सुख बनकर मिला था, वही दुःख का रूप धारण करके खड़ा हो गया। यही है जीवन का सत्य। श्रीमद् भागवत महापुराण आपको निमंत्रण देते हैं इसी सत्य को जानने का। इस कथा में निमज्जित होने पर पहले आपमें उत्सुकता जागेगी फिर आपकी वही उत्सुकता जिज्ञासा बन जाएगी फिर जिज्ञासा आपकी मुमुक्षा बन जाएगी। आप मुमुक्षु होकर किसी ज्ञानी महापुरुषों के चरणों का आश्रय लेकर उनकी वाणी का आश्रय लेंगे और आप देखेंगे कि जैसे ही आपको सत्य का ज्ञान हुआ, जैसे ही आपका वैराग्य पुष्ट हुआ, तैसे ही भक्ति भी आपके हृदय में नृत्य करने लगेगी।

बीकानेर, राजस्थान के पॉलिटेक्निक कॉलेज ग्राउंड में श्रीमद् भागवत कथा महोत्सव की विराट जनमेदिनी को संबोधित करते हुए पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी।

अन्य चित्र में व्यासपीठ आरती का दृश्य।

श्रीमद् भागवत कथा महोत्सव, बीकानेर की झलकियाँ

व्यासपीठ का पूजन कर पूज्या दीदी माँ जी का अभिनंदन करते हुए
बीकानेर के सांसद एवं केन्द्रीय कानून मंत्री श्री अर्जुनराम मेघवाल

भगवत लीलाओं के जीवन्त मंचन में भावविभोर कथा पांडाल

श्री सुनील कुमार सोनी के आवास पर उनके परिजनों के साथ

श्री सुरेन्द्र राजपुरोहित के आवास पर उनके परिजनों के साथ

मेरा जीवन
हिन्दू स्वाभिमान की रक्षा में समर्पित है

-दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा

जीवन का ऐश्वर्य और विस्तार करो क्योंकि वो तुम्हारा स्वभाव है। तुम विष्णु के अंश हो और विष्णु का अर्थ है विस्तार पा जाना। इसलिए खूब श्रम करो। मेरे ठाकुरजी के जीवन का दर्शन करो। धरती पर अपनी लीलाएँ करते हुए उन्होंने एक सौ पच्चीस वर्ष की आयु तक अनेक चुनौतियों को स्वीकारा और उन पर विजय पाई। ध्यान रखना कि कन्हैया को अपने जीवन में सबसे पहली चुनौती तो उनके अपने कंस मामा से ही मिली थी। ऐसे ही हम सबके जीवन में चुनौतियाँ आती हैं तो क्या बड़ी बात है। भगवान के जीवन चरित्र से सीखना चाहिए।

ख्याल रखना कि इस धराधाम पर तुम एक चुंबकीय आकर्षण हो। तुम जिसे चाहते हो वो आकर्षित होकर तुम्हारे आसपास होता है। अगर तुम अगर तुम दुख को सुबह ही सुबह निमंत्रण दे देती हो, तो सारा दिन दुख में निकलेगा और सुबह सुबह उठते ही तुम सुख को कहती हो कि 'आजा मेरे घर में, आजा मेरे हृदय में' तो सारा दिन आनंद से बीतता है। अगर अपनों को भी संदेह की दृष्टि से देखोगी तो संदेह ही पल्ले पड़ेगा। काँटें बोओगी तो काँटें ही मिलेंगे।

संसार की आसुरी शक्तियों से भयभीत मत होना क्योंकि ये देवासुर संग्राम तो हर युग में चलता रहेगा। सज्जन शक्तियों को इसके विरुद्ध बस एकजुट रहना होगा। बहुत से नकली लोग भी आएंगे। द्वापर युग में एक पौंड्रक वासुदेव था। वो चार नकली भुजाएँ लगाकर स्वयं को असली श्रीकृष्ण कहता था। ऐसे ही इस कलियुग में भी लाखों नकली घूम रहे हैं, जनता को मूर्ख बनाते हुए। देवियों, आज की इस भारत भूमि पर सबसे बड़ा असुर जो है, वो है नैरेटिव। और ये नैरेटिव बनाने वाले बैठे कहाँ हैं? पाकिस्तान में बैठे हैं, दुबई में बैठे हैं, बांग्लादेश में बैठे हैं।

'सोशल मीडिया' के माध्यम से ये ही लोग तुम्हारी बुद्धि को भ्रमित कर रहे हैं। तुम्हें अपने ही देश का नेतृत्व उसके प्रति भ्रमित कर रहे हैं और सनातन का सत्यानाश करने के षड्यंत्र रच रहे हैं। जब तुम बार-बार वो देखोगे देखोगे सुनोगे तो तुम्हें अपने ही देश पर, अपने ही देश की व्यवस्था पर संदेह हो जाएगा और तुम अपने देश की कानून व्यवस्था को गाली दोगे। अपनी बढ़ती हुई प्रगति के पैर काट दोगे और जिन्होंने आपके लिए सर्वस्व समर्पित किया, उन्हीं में चरित्रहीनता देखने लग जाओगे। इससे बड़ा दुर्भाग्य कोई और हो नहीं सकता। इस युद्ध को जीतने की तैयारी करो। इस युद्ध को अगर तुमने नहीं जीता ना भारतीयों, तो फिर कभी नहीं उठ पाओगे। मात्र दस वर्षों का समय है तुम्हारे पास! इसलिए जो दिखाया जाए, जो सुनाया जाए, उसीको सत्य मत मानो। अपनी बुद्धि पर, अपने अनुभव पर भरोसा करो। सोशल मीडिया खोल के देख लो, हर तरफ ऐसा लगेगा, जैसे भारत में सब सत्यानाश हो रहा है। जो लोग राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को अपना जीवन देते हैं वो डॉक्टर हैं, वो इंजीनियर हैं, वो चार्टर्ड अकाउंटेंट हैं, उसके बाद भी उन्होंने अपना सर्वस्व भारतमाता को अर्पित किया है। आपको उनका उत्साहवर्धन करना चाहिए। तुम भी विचार करो कि तुम्हारी संतानों के विवाह पच्चीस-छब्बीस वर्ष की आयु में हो जाने चाहिए। वो दो-तीन बच्चों के माँ-पिता बनें और एक बालक अपने देश को दें, अपने धर्म को दें ताकि धर्म और राष्ट्र की रक्षा हो।

एक बात बहुत कष्टकारी है कि तुम्हारे लिए कोई चाहे जितना कुछ कर दे लेकिर तुम्हें उसकी निंदाकरने में बड़ा मजा आता है। हमें किसी बाहर से शत्रुओं की जरूरत थोड़ी है, हम तो अपने शत्रु स्वयं ही हैं। बड़े पारंगत हैं हम, अपने आपको गाली देने में। आपको अपनी परंपराओं का मजाक उड़ाने में मजा आता है। क्यों? क्योंकि पिछले पचहत्तर वर्षों की राजनीति ने आपको ऐसा बना दिया है। फिल्मों में भूदेव ब्राह्मण देवता का मजाक उड़ाया जाता है। जो प्रज्ञा के धनी हैं, जिनके बिना ना तुम्हारा विवाह हो सकता है और जिनके बिना ना तुम्हारी संतानों का जातकर्म संस्कार हो सकता है, जिनके बिना आपकी अंत्येष्टि तक नहीं हो सकती और जिनके बिना आपके पितरों को तृप्ति नहीं मिल सकती, उनको गाली देने का रिवाज! इससे शर्मनाक कोई स्थिति हो सकती है तुम्हारी? बुद्धि में कचरा भर दिया गया, इतनी सुन्दर सामाजिक व्यवस्था के विरुद्ध।

सौभाग्य से इस समय देश को एक कुशल राजनैतिक नेतृत्व मिला है। गलतियाँ सबसे होती हैं, चौबीस कैरेट सोने जैसा कोई नहीं होता, ये बात स्मरण रखना। मुझे आज यह बता दो कि आपको सनातन को 'डेंगू' और 'मलेरिया' कहने वाले, प्रभु श्रीराम जी के अस्तित्व पर संदेह करने वाले और श्रीराम जन्मभूमि पर शौचालय बनाने की निकृष्टतम बातें कहने वाले नेता चाहिए या रामलला का मंदिर बनाकर धर्मध्वजा फहराने वाले चाहिए, फैसला कर लो।

और यह मत कहना कि मैं किसी पार्टी की एजेंट हूँ। आज तक किसी राजनीतिक पार्टी की मैं सदस्य नहीं हूँ। मैं हिन्दू स्वाभिमान की रक्षा के लिए जीवित हूँ और मरूंगी भी तो अपने राष्ट्र के गौरव के लिए संघर्ष करती हुई मरूंगी। मुझे कोई आकर्षण नहीं सत्ता का, मुझे कोई आकर्षण नहीं कि मुझे कहीं से टिकट लेकर चुनाव लड़ना है। वो मेरा संसार नहीं है। मेरा संसार तो मेरे रामलला हैं। मेरी भगवती हैं। मेरा इष्ट तो मेरी हिन्दू जनता है। उसके स्वाभिमान के संघर्ष में हमेशा अग्रपंक्ति में खड़ी रहूंगी। आप भी सजग रहिये। जो आपके वोट पाकर सत्ता के शीर्ष पर बैठते हैं, उनसे सवाल पूछने में मत हिचकिचाइये। सनातन धर्म और इस महान राष्ट्र के संरक्षण, संवर्धन में यदि वो कहीं भी ढीले दिखाई पड़ें, तो उनके कान उमेठना आपका परम कर्तव्य है।

निःशुल्क मोतियाबिन्द ऑपरेशन शिविर

बधाई की पात्र हैं दीदी माँ जी

-डॉ.राधावल्लभ
मुख्य चिकित्सा अधिकारी-मथुरा

वृन्दावन

वात्सल्य ग्राम स्थित प्रेमवती गुप्ता नेत्र चिकित्सालय में 'रोटरी क्लब ऑफ मुम्बई होराईजन' के सौजन्य से दो दिवसीय निःशुल्क मोतियाबिंद ऑपरेशन शिविर का आयोजन किया गया। इसमें मथुरा और वृंदावन के साथ फिरोजाबाद, अलीगढ़, फर्रुखाबाद, आगरा, कासगंज, एटा, मैनपुरी, बदायूँ तथा पीलीभीत आदि जनपदों से आए 291 मोतियाबिंद रोगियों का सफल ऑपरेशन किया गया। मुंबई के नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. श्याम अग्रवाल के नेतृत्व में डॉ.विशाल राठौर, डॉ.जुगल शाह, डॉ.आनंद जयपुरिया, डॉ.अनुज बहुवा, डॉ.आरती अग्रवाल, डॉ.राहुल जैन, डॉ.मयूर अग्रवाल, डॉ.सौरभ रामुका, डॉ.विशाल उप्पल तथा पैरामेडिकल टीम ने इन सफल ऑपरेशन्स में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इस अवसर पर 15 फरवरी को आयोजित शिविर समापन समारोह के मुख्य अतिथि डॉ.राधावल्लभ (मुख्य चिकित्सा अधिकारी-मथुरा) ने समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि -'मरीज की सतर्कता से आँखों की रोशनी को बचाया जा सकता है। जब व्यक्ति को धुंधला दिखाई देने लगे, यदि उसी समय वो सुयोग्य डॉक्टर से यदि अपनी आँखों का चेकअप करवा ले तो उसकी आँखों की रोशनी बचाई जा सकती है। अधिकांश लोग मोतिया पक जाने के बाद डॉक्टर के पास जाते हैं और ऐसी स्थिति में आँखों की रोशनी को खतरा हो जाता है। ऐसे अधिकांश लोगों की रोशनी वापस नहीं आती। वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन में दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी के आशीर्वाद से आयोजित होने वाले शिविरों में मोतियाबिंद के ऑपरेशन अत्याधुनिक मशीनों द्वारा किए जाते हैं, जिससे रोगियों की आँखों की रोशनी सुरक्षित रहती है। इसके लिए दीदी माँ बधाई की पात्र हैं।'

रोटरी आई.पी.डी.जी. श्री नीरव अग्रवाल ने रोटरी क्लब के सेवा कार्यों पर प्रकाश डाला और कहा कि -'रोटरी क्लब समय-समय पर चिकित्सा सेवा शिविर लगाकर सदैव समाज की सेवा में कार्य करता रहता है।'

रोटरी प्रेसिडेंट (मुंबई) श्री सुनील भंडारी ने डॉक्टर्स का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि -'वात्सल्य ग्राम में नेत्र शिविर लगाकर मन को संतुष्टि मिली है क्योंकि यहाँ की व्यवस्थाएँ उत्तम प्रकार की हैं।' रोटरी प्रेसिडेंट (मथुरा) श्री नरेश बर्मन ने कहा कि -'वात्सल्य ग्राम के सेवा प्रकल्पों के साथ रोटरी क्लब सदैव खड़ा है।'

इस अवसर पर मुंबई की दीपा केसवानी ने 34 लाख की फेको मशीन प्रेमवती गुप्ता नेत्र चिकित्सालय को भेंट की। वात्सल्य निर्झर के सम्पादक देवेन्द्र शुक्ल ने डॉ.श्याम अग्रवाल की उपलब्धियों एवं समाज सेवा पर प्रकाश डाला। अन्त में औषधि और चश्मा वितरण के साथ शिविर सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर श्री महेश खंडेलवाल, श्री राजेश पांडेय, सुश्री मीनाक्षी अग्रवाल, श्री बालजी चतुर्वेदी आदि उपस्थित रहे। शिविर में श्री रमाकांत शर्मा, श्री महेंद्र सिंह, श्री भूपेंद्र सिंह, श्रीमती मीनू एवं वैशिष्ट्यम् परिवार का विशेष योगदान रहा। रोटरी आई.पी.पी श्री विनोद अग्रवाल मुंबई ने सभी का आभार व्यक्त किया। मंच संचालन श्री उमाशंकर 'राही' ने किया।

प्रेमवती गुप्ता नेत्र चिकित्सालय, वात्सल्य ग्राम के मोतियाबिन्द ऑपरेशन शिविर समापन समारोह को संबोधित करते हुए मुम्बई के ख्यातनाम आई सर्जन डॉ.श्याम अग्रवाल।

श्रीमती दीपा केसरवानी ने भेंट की 34 लाख रुपयों की फेको मशीन

वृन्दावन

मुम्बई की ख्यात समाजसेवी श्रीमती दीपा केसरवानी ने विगत 14 फरवरी को वात्सल्य ग्राम स्थित प्रेमवती गुप्ता नेत्र चिकित्सालय को 34 लाख रुपयों की लागत की अत्याधुनिक फेको मशीन भेंट की।

इस मशीन के बारे में जानकारी देते हुए ख्यात नेत्र सर्जन डॉ.आरती अग्रवाल ने बताया कि -'ये मोतियाबिंद सर्जरी में प्रयोग की जाने वाली एक अत्याधुनिक मशीन है। इसे फेकोइमल्सीफिकेशन तकनीक के लिए उपयोग किया जाता है, जो आजकल मोतियाबिंद हटाने की सबसे आम और सुरक्षित विधि है। यह मशीन आँख के मोतिया को छोटे-छोटे टुकड़ों में तोड़कर बाहर निकालने का काम करती है। फिर उसी जगह एक कृत्रिम लेंस लगा दिया जाता है। मशीन की पतली सुई से हाई फ्रीक्वेंसी अल्ट्रासाउंड तरंगें निकलती हैं। ये तरंगें मोतियाबिंद वाले लेंस को नरम करके छोटे-छोटे कणों में बदल देती हैं फिर वही सुई वैक्यूम की तरह काम करके उन छोटे टुकड़ों को आँख से बाहर खींच लेती है।'

इस मशीन की भेंट के रूप में श्रीमती दीपा जी ने एक बहुत बड़ा सहयोग वात्सल्य ग्राम के इस हॉस्पिटल को प्रदान किया है। अब इसके द्वारा निःशुल्क मोतियाबिंद ऑपरेशन्स की संख्या और अधिक हो सकेगी। इसके लिए परमशक्ति पीठ की ओर से आदरणीया दीपा जी के प्रति कृतज्ञ आभार...

श्री नवग्रह शक्तिपीठ मन्दिर, डबरा, जिला-ग्वालियर, मध्यप्रदेश

मध्यप्रदेश के डबरा में नवनिर्मित श्री नवग्रह शक्तिपीठ मंदिर के प्राणप्रतिष्ठा समारोह में पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी एवं शक्तिपीठ के संस्थापक मध्यप्रदेश के पूर्व गृहमंत्री डॉ. नरोत्तम मिश्रा, परिसर का दर्शन करते हुए।

श्री नवग्रह शक्तिपीठ मंदिर प्राणप्रतिष्ठा समारोह को संबोधित करते हुए पूज्या दीदी माँ जी ने कहा कि -'हम सदा सुख चाहते हैं। परन्तु शास्त्र कहते हैं कि सुख बटोरने से नहीं बल्कि बाँटने से मिलता है। अब आप देख रहे हो कि हमारे श्री नरोत्तम मिश्रा जी ने क्या बाँटा है। उन्होंने इ अद्भुत श्री नवग्रह शक्तिपीठ मंदिर की स्थापना में अपना सम्पूर्ण सहयोग करके सनातन धर्म का प्रसाद आप सबके बीच वितरित किया है। उन्होंने धर्म की धारा में हमें निमज्जित होने का अवसर दे दिया है। जो कोई भी धर्म की शरण में रहेगा, वही परम सुख पाएगा। जैसे अपनी जड़ों से जुड़े बिना कोई बेल हरी भरी नहीं हो सकती, ठीक वैसे ही हम सब सनातन की जड़ों से जुड़े हैं। उसी से प्राप्त हुआ पोषण हमारे जीवन को सुख रूपी हरियाली से आच्छादित करता है। श्री नरोत्तम जी ने इस दिव्य शक्तिपीठ की स्थापना करके बहुत ही उत्तम कार्य किया है।'

पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी के आगामी कार्यक्रम

विराट धर्मसभा

16 मार्च 2026

स्थान : बदनावर, जिला-धार, मध्यप्रदेश
समय : दोपहर 11 बजे
सम्पर्क नंबर : 7999372833

भारत की महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु जी का वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन आगमन

19-20 मार्च 2026

स्थान : संविद गुरुकुलम् गर्ल्स सैनिक स्कूल
वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन, उत्तरप्रदेश

समय : प्रातः 11 बजे

स्वागतातुर :
संविद सैनिक स्कूल एवं परमशक्ति पीठ परिवार

जीवनदीप आश्रम रुक्मिणी विहार लोकार्पण समारोह

24 मार्च 2026

स्थान : रुक्मिणी विहार, वृन्दावन, उत्तरप्रदेश
आयोजक :
महामंडलेश्वर स्वामी श्री यतींद्रानंद गिरि जी

समय : प्रातः 10 से दोपहर 12 बजे तक

चैत्र नवरात्रि एवं रामनवमीं महोत्सव

19 से 27 मार्च 2026

स्थान : वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन, उत्तरप्रदेश
आयोजक : परमशक्ति पीठ एवं वात्सल्य परिवार

251 गौसंरक्ष सह गौनामकरण सनातन महा समारोह

28 मार्च 2026

स्थान : यमुना स्पोर्ट्स काम्प्लेक्स ऑडिटोरियम
सूरजमल विहार, दिल्ली
समय : सायं 4 से 6 बजे तक

नि:शुल्क मोतियाबिन्द ऑपरेशन शिविर

28 एवं 29 मार्च 2026

स्थान : प्रेमवती गुप्ता नेत्र चिकित्सालय,
वात्सल्य ग्राम, मथुरा-वृन्दावन मार्ग,
वृन्दावन (उत्तर प्रदेश)

सम्पर्क नंबर
9412277386, 8273858242

टेलीविज़न पर

परम पूज्य सद्गुरुदेव युगपुरुष
स्वामी परमानन्द जी महाराज की
परम वाणी

दिशा TV
प्रतिदिन
रात्रि 9:30 बजे

Vedic
सोमवार, बुधवार एवं
गुरुवार प्रातः 9:30 बजे

परम पूज्य वात्सल्यमूर्ति
दीदी माँ साध्वी ऋतम्भराजी की
वात्सल्य वाणी

संस्कार
THE CHANNEL OF INDIA
प्रतिदिन
सायं 7:20 बजे

आस्था
प्रतिदिन
प्रातः 8:00 बजे

सत्संग
प्रतिदिन
रात्रि 10:00 बजे

Postal Regd. No. DL(E)20/5231/2025-27
DELMUL/2006/16716
Postal Date : 9th & 10th of Every month

An ISO 9001: 2000 Certified School

Samvid Gurukulam Girls Sainik SCHOOL

CBSE affiliated (# 2131180)
Co-Education up to Class Vth; Residential and Day School for Girls
Play Group - Grade XII (Science, Commerce, Humanities)

TECHNOLOGY ENABLED SCHOOL
Powered By :
Extramarks

Approved as
Girls Sainik School
by 'Sainik School Society'
Ministry of Defense

We bring out the 'winner in your child'

- State of the art infrastructure
- Low teacher student ratio
- Total Personality Development
- Wi-Fi Campus
- Counseling Cell
- Center of performing arts
- Safe guarding Indian culture as part of world heritage
- Science, Computer & Mathematics Lab
- Regular Excursions
- Centrally Air cooled Hostel for girls.
- SANSKARAM CLASSES: Learning life skills through Value Education
- NANHI DUNIYA: Introduction of children to nature
- SPORTS ACADEMY: Horse Riding, Skating Football, Hockey, Basket Ball, Lawn Tennis, Table Tennis, Judo-Karate, 400M Track
- MUSIC: Vocal & Instrumental
- DANCE: Bharatnatyam, Kathak, Contemporary
- Transport facility available

Vatsalya Gram, Mathura - Vrindavan Marg, P.O. - Prem Nagar,
Vrindavan - 281003 (U.P.) Mobile No. 94127 77152 & 94127 77154
Website : www.samvidgurukulam.org
Like us at : www.facebook.com / samvid4u
email : principal@samvidgurukulam.org